॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जून, 2017 वर्ष 20, अंक 6
विक्रमी सम्वत् 2074
एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 20

बुद्धिमान बनो

❒ ठाकुर विक्रम सिंह

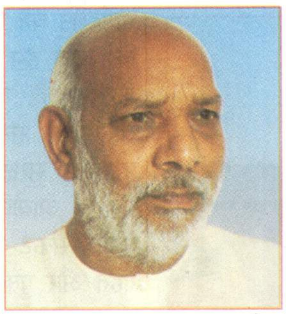

'यो बुध्यते बोधयति वा स बुधः' जो स्वयं बोध स्वरूप और सब जीवों के बोध का कारण है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम बुध है। परमेश्वर ने मानव को जो सबसे विशेष चीज दी है जिसके कारण सब योनियों में मनुष्य सर्वोपरि है। वह है बुद्धि। अन्य जीवों में भी बुद्धि का कुछ न कुछ अंश विद्यमान है। हाथी एक बुद्धिमान जीव है। पुलिस के कुत्ते बुद्धि की वृद्धि के कारण विशेष दक्षता रखते हैं। बैय्या अपना सुन्दर घोंसला बनाकर अपनी सूक्ष्म बुद्धि को प्रदर्शित करती है। मधुमक्खी का छत्ता विशेष रचना का सूचक है। कहां तक गिनायें, अनेक प्राणी भी बुद्धिरूपी धन रखते हैं। किन्तु मानव में और उनमें यह अन्तर है कि मानव अपनी बुद्धि के बल से संसार को भी जानता है, अपने आपको भी जान लेता है और परमात्मा को भी जानता है, अन्य जीवों में यह सामर्थ्य नहीं। आज के मानव का आहार-व्यवहार यह बताता है कि उसके कार्य आज बुद्धि के विरूद्ध हैं। ईश्वर ने मनुष्य जिस स्थान पर पैदा किया वह आज उससे भी नीचे गिरता जा रहा है। आज वह ऐसी गहरी खाई में गिर गया है जिससे उसका निकलना कठिन हो रहा है। आज के मानव जीवन पर आप थोड़ा दृष्टिपात करेंगे तो देखेंगे कि वह पशुओं से भी गाया-गुजरा है क्योंकि उस दयालु ईश्वर ने अपने इस मानवस पुत्र को आदेश दिया था कि तुम्हें अपने भोजन में सुन्दर पदार्थों का उपभोग करना है, शाकाहारी रहना है, मैं तुम्हारे लिए सेब जैसा सुन्दर पौष्टिक फल, संतरे व आम जैसी रसीला अंगूर जैसा मधुर प्रिय फल दे रहा हूं। जब गर्मी अधिक पड़े, ऐ मानव तब तू परेशान होने लगे तो तेरे लिए रसभरे शहतूत होंगे, रस के भंडार तरबूज व खरबूज होंगे, खुश्की दूर करने के लिए ककड़ी-खीरा होगा। यदि इससे भी काम न चले तो बादाम जैसी सूखी मेवा, मुनक्के डालकर ठंडाई पीना जो तेरी तृषा को शान्त करेगी, साथ-साथ बुद्धि में भी वृद्धि करेगी। जब मेरे प्यारे पुत्र तू वर्षा ऋतु में प्रविष्ट होगा तो तुझे आम रसभरा फल मिलेगा-मक्का के भुटटों का उपभोग करना, जामुन जैसा शीतल बुद्धि, वीर्यवर्धक फल खाना। शरद ऋतु आयेगी तो पौष्टिक अमरूद खाना, चीकू तेरे लिए ही हैं। सुन्दर पौष्टिक अन्न तिल, जौ, उड़द, चावल, चना सब दालें तेरे लिए ही हैं। किन्तु अफसोस है, दुख है, आज का मानव अपने सब कार्य बुद्धि के विरूद्ध कर रहा है। कहां सुन्दर अन्न व फल, कहां तेरी नीच पिशाच, राक्षसी गिरी हुई भावना। सुन्दर पशुओं को, पक्षियों को मार-मारकर खाने लगा। पेट को कब्रिस्तान ही बना डाला, और तो और अंडे भी निगलने लगा। अंडे तक न रहा, उनसे निकलने वाले चूजों (बच्चों) को तल-तलकर पकौड़े बना-बनाकर खाने लगा। वाह रे राक्षस! फिर भी अपनी बुद्धि पर नाज कर रहा है। वाह पीने के लिए अमृतमय दूध दिया तो पीने लगा अंगूर जैसे अनेकों फलों को सड़ाकर शराब, जिससे बुद्धि भ्रष्ट होती है। बुद्धि को बिगाड़ने के लिए ही पीने का बहाना बनाकर उड़ाने लगा बीड़ी सिगरेट का धुआं, वाह रे नरपिशाच, मानव योनि को भी धब्बा लगा दिया। मानव कहते ही उसे हैं जो मननशील हो, तू इस योनि में न चेता तो क्या गदहा बनकर चेतेगा। तुझसे तो अच्छे पशु ही हैं जो आदि सृष्टि से आज तक अपने नियमों में बंधे चले आ रहे हैं। गाय दाना ही खाती है, अंडे व मांस नहीं खा सकती-सिंह हिंसक प्राणी है मांस ही खाता है, घास नहीं खा सकता।

मानव का आहार तो बुद्धिपूर्वक न रहा किन्तु व्यवहार भी ठीक न रहा। सच है आहार बिगड़ेगा तो व्यवहार भी अवश्य ही बिगड़ेगा उसे कोई रोक नहीं सकता। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने व्यवहार के लिए लिखा कि-

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए। आज कहां है हमारा प्रीतिपूर्वक व्यवहार-आज का मानव लड़ रहा है धर्म के नाम पर, सभ्यता के लिए। अलग-अलग भाषाओं का बहाना बनाकर, चूंकि उसे अपनी राक्षसी वृत्ति की जो कि उसके आहार के कारण ही उत्पन्न हुई हैं उसकी तृप्ति करनी है खून से। अपने को सभ्य व बुद्धिमान कहने

(शेष पृष्ठ 18 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महात्मा हंसराज जयन्ती 'समर्पण दिवस' के रूप में आयोजित

डी.ए.वी. देश में सामाजिक विकास को समर्पित संस्था- महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत

डी.ए.वी. का वर्तमान महात्मा हंसराज के तप-त्याग/मार्गदर्शन का परिणाम- पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

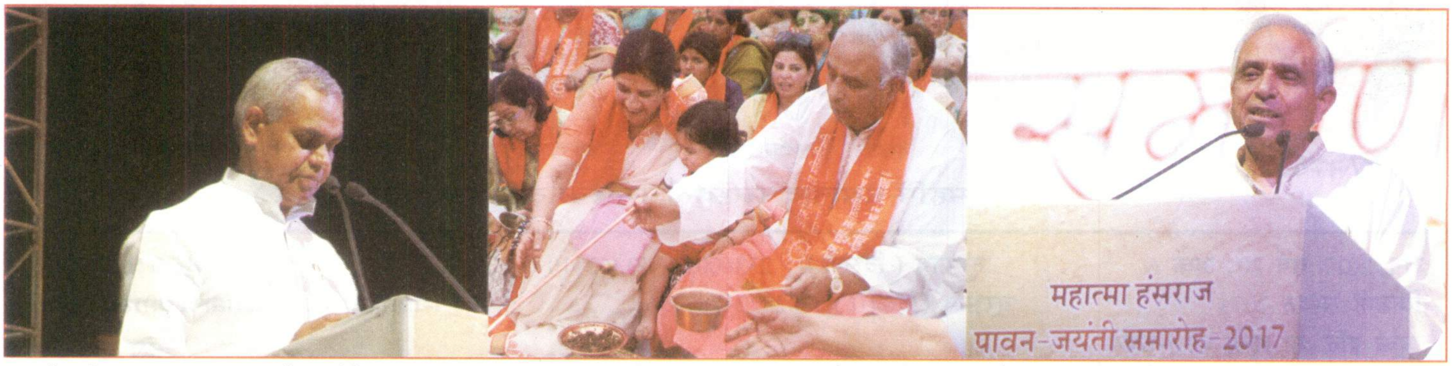

समर्पण दिवस पर अपना उद्बोधन देते महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत, यज्ञवेदी पर उपस्थित श्री पूनम सूरी एवम् श्रीमती मणी सूरी, समारोह के अध्यक्ष, प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पदम्श्री डॉ.पूनम सूरी उपस्थित जनसमूह को आशीर्वाद देते हुए।

आर्यसमाज एवम् डी.ए.वी. आन्दोलन देश में स्वस्थ सामाजिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है।' ये शब्द हिमाचल प्रदेश के महामहिम

भारत सरकार द्वारा पदम्श्री से अलंकृत होने पर डी.ए.वी. एवम् सभा के प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी का विशेष अभिनन्दन

राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने महात्मा हंसराज की पावन जयंती पर जयपुर में आयोजित 'समर्पण दिवस' समारोह के अवसर पर कहे। आचार्य देवव्रत 'समर्पण दिवस' समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में उद्बोधन दे रहे थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में यह भी कहा कि ''आर्य समाज ने जहां सामाजिक बुराईयों के विरूद्ध समाज में नवचेतना का सूत्रपात किया, वही डी.ए.वी. आन्दोलनों में अपने संस्थानों के माध्यम से लाखों घरों को ज्ञान के आलोक से आलोकित किया। करोड़ो युवाजनों के भविष्य को सुखद बनाया।''

'समर्पण दिवस' समारोह के अध्यक्ष एवम् आयोजन के प्रेरणा स्रोत डॉ. पूनम सूरी ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा, ''महात्मा हंसराज पावन-जयंती को 'समर्पण दिवस' के रूप में आयोजित करने का उद्देश्य उन मूल्यों के प्रति स्वयं को पुन: समर्पित करना है जो उस त्यागी महापुरुष सहित डी.ए.वी. आन्दोलन के संस्थापकों ने अपनाए।''

डी.ए.वी. आन्दोलन के वर्तमान राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप की चर्चा करते हुए, डॉ. सूरी ने कहा यह सब महात्मा हंसराज के तप-त्याग और मार्गदर्शन का परिणाम है। उन्होंने कहा कि मुझे यह कहते हुए गर्व होता है कि आज हम देश के उन हिस्सों में भी शैक्षणिक गतिविधियों को संचालित कर रहे हैं, जहां सरकार सहित कोई भी संगठन मौजूद नहीं है। हमारे सामाजिक सरोकार भी गहरे हैं। साफ-सफाई, जल-संरक्षण, वृक्षारोपण, पर्यावरण सुरक्षा तथा रक्तदान सम्बन्धी गतिविधियाँ हमारे संस्थान नियमित रूप से आयोजित करते हैं। देश में जब भी कोई प्राकृतिक आपदा अथवा राष्ट्रीय संकट आता है, तो आर्य समाज और डी.ए.वी. आन्दोलन आगे बढ़कर राहत और पुनर्वास कार्यो में जुट जाते हैं।

डॉ. पूनम सूरी को भारत सरकार ने हाल ही में साहित्य एवम् शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'पद्म श्री' से सम्मानित किया है। इस उपलक्ष्य में देश भर से आए प्राचार्यो, अध्यापकों तथा मुख्यालय के अधिकारियों ने उन्हें भावपूर्ण बधाई दी।

डी.ए.वी. सेनटेनरी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर, जयपुर में आयोजित

(शेष पृष्ठ 19 पर)

इस अवसर पर डी.ए.वी. के प्रि. श्री विजय कुमार पांडुरंग (शोलापुर), श्री अजय बेरी (अमृतसर), श्री प्रशांत कुमार (भिलाई), श्रीमती स्वीन पूरी (जम्मू) एवम् डी.ए.वी. के विद्यार्थियों को विशिष्ट उपलब्धियों के लिए महात्मा हंसराज सम्मान दिया गया।

आर्ष ग्रन्थों में जातिगत भेदभाव नहीं

विदेशियों द्वारा प्राय: हमारे ग्रन्थों को हमारी कानून की पुस्तक कहा जाता है। विशेषकर मनुस्मृति को कानून संहिता कहा गया है। हमारे समाज में जातिगत शोषण-उत्पीड़न उसी की देन बताया जाता है। क्योंकि काफी समय से इसी धारणा को बार-बार उछालने से हमारे लेखक एवं टिप्पणीकार भी इस धारा में बह कर वही दोहराते हैं। अगर स्वयं आर्ष ग्रन्थों को पढ़ें तो उनमें कहीं भी बाध्यकारी नियम होने का दावा नहीं है।

अगर इतिहास पर भी नजर दौड़ायें तो कहीं भी नहीं मिलता कि अमुक सम्राट, राजा, शासक किसी भी प्रकार से मनुस्मृति के अनुरूप अपनी कानून व्यवस्था चलाता हो, हो सकता है मनुस्मृति से प्रभावित रहा हो, लेकिन राज्य की कानून व्यवस्था बिल्कुल वैसी हो ऐसा नहीं था। दूसरी ओर आर्ष ग्रन्थों में कहीं भी किसी जाति के समूह के शोषण उत्पीड़न के लिए कोई निर्देश या संकेत इन ग्रन्थों में नहीं मिलते। फिर भी इन ग्रन्थों के प्रति दुष्प्रचार क्यों? समझ से बाहर है।

अभी कुछ समय पूर्व शशि एस.शर्मा की अंग्रेजी पुस्तक मनुवाद पर आधारित प्रकाशित हुई है, जिसमें उपरोक्त विषय को गम्भीरता से उठाया गया है। असंख्य शास्त्रों, टीकाओं, स्मृतियों का उदाहरण देते हुए इस विषय पर विचार किया गया है। पुस्तक के अनुसार पिछले ढाई हजार वर्षों में भी भारत के बारे में विदेशी अवलोकन कर्त्ताओं और विद्वानों द्वारा तरह-तरह के वरण उपलब्ध हैं। लेकिन किसी में भी जातिगत शोषण का वर्णन नहीं है, जबकि विदेशी होने के नाते उनकी इस पर सबसे पहले नजर जाती।

वैदिक वर्ण व्यवस्था अपने ढंग की अनूठी व्यवस्था है, जो विश्व में भारत के अलावा और कहीं उपलब्ध नहीं है। विश्व में आज कई ऐसे बुद्धिजीवी अन्य व्यवस्था को मानने वाले भी वैदिक वर्ण व्यवस्था का सिक्का मानते हैं। आओ इस पर कुछ विचार करें-

वर्ण व्यवस्था का आधार: यजुर्वेद के 31वें अध्याय में इसका उल्लेख मिलता है जिसे स्वामी दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में भी लिखा है। उन्होंने अविद्वान मूर्ख लोगों की व्याख्या का उत्तर देते हुए कहा कि 'ब्राह्मण ईश्वर के मुख से पैदा हुए हैं, क्षत्रिय ईश्वर के बाजुओं से पैदा हुए हैं, वैश्य उरु और शूद्र पग से उत्पन्न हुए हैं का खण्डन करते हुए कहा कि 'जब ईश्वर निराकार है, जिसका न कोई मुख है, न बाजू, न उरु, न पैर तो वह किसी को जन्म कैसे दे सकता है?

वर्ण व्यवस्था का आधार-गुण-कर्म-स्वभाव: वैदिक वर्णव्यवस्था में जन्म को नहीं, गुण कर्म-स्वभाव को ही वर्ण का आधार स्वीकार किया गया है। स्वामी जी ने एक महत्वपूर्ण प्रश्न इस संदर्भ में सत्यार्थप्रकाश में उठाया है, क्या ब्राह्मण माता-पिता से उत्पन्न होने वाला ब्राह्मण होता है? क्या अन्य वर्ण के माता-पिता की सन्तान भी ब्राह्मण हो सकती है? स्वामी जी ने उत्तर दिया है, हाँ! बहुत से हो गये, होते हैं, और होंगे भी। अब भी जो उत्तम विद्या स्वभाव वाला है वही ब्राह्मण के योग्य और मूर्ख शूद्र के योग्य होता है और वैसा ही आगे भी होगा।

वर्ण में परिवर्तन हो सकता है: मनु महाराज का प्रमाण देते हुए ऋषिवर मानते हैं कि शूद्र कुल में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति गुण-कर्म-स्वभाव से ब्राह्मण-क्षत्रिय या वैश्य हो सकता है। इसी प्रकार से ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने वाला शूद्र भी हो सकता है। अर्थात चारों वर्णो में किसी वर्ण का व्यक्ति दूसरे वर्ण का हो सकता है। चारों वर्णो में ब्राह्मण को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इसका कारण उसका ब्राह्मण कुल में जन्म लेना कदापि नहीं है। इसका मुख्य कारण उसके स्वभाव का उत्कृष्ट होना है।

वर्ण और जाति में अन्तर: चारों वर्णो का वर्णन और विवेचन करते हुए वर्ण और जाति शब्दों को भी पूर्णतया समझ लेना ठीक रहेगा। अपनी आजीविका के लिए मनुष्य जिस वर्ण का चुनाव करता है वही उसका वर्ण हो जाता है। पुत्र जब अपने पिता के स्थान पर उसी कार्य को करने लगता है तो वह भी उसी वर्ण का स्वाभाविक रूप से हो जाता है। आजीविका के लिए किया गया व्यवसाय व्यक्ति का पेशा कहलाता है। एक ही पेशे अर्थात् व्यवसाय के लोगों का समूह अब जाति कह कर पुकारा जाने लगा है। सूत, मागध, निषाद, चर्मकार, तेली, धोबी, स्वर्णकार, सभी वर्णसंकर का ही रूप हैं। सब अपने-अपने वर्ण की श्रेष्ठता के मिथ्याभिमान से अभिभूत अन्य वर्ण के लोगों को हीन भाव से देखने एवम् मानने लगे हैं और इस प्रकार ऊँच-नीच की प्रवृत्ति ने जन्म लिया। वास्तव में माली, पनहेड़ी, तेली, सुनार, लुहार, बढ़ई, कुम्हार, चर्मकार आदि सब प्रत्यक्ष रूप में व्यवसाय सूचक शब्द हैं न कि जातिसूचक।

जाति शब्द का वास्तविक अर्थ वह नहीं है जो आज लोक में प्रचलित हो गया है और जो वर्ण शब्द के पर्याय के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। इसी शब्द की भ्रान्ति ने सारी विडंबना, अव्यवस्था, ऊँच-नीच का भाव तथा स्पृश्यता के अभिशाम को जन्म दिया है। जाति शब्द का वैदिक अर्थ स्पष्ट होना अतिआवश्यक है। समान रूप से जन्म लेने वालों की एक जाति होती है। मनुष्य और पशु दोनों जेरज योनि/जाति के प्राणी हैं, पक्षी-सर्प-मच्छर-मक्खी आदि अण्डज योनि/जाति के प्राणी हैं, इसी प्रकार जिसे हम जूँ के रूप में जानते हैं वे स्वदेज योनि/जाति के प्राणी हैं। वृक्ष और सभी वनस्पतियाँ उद्भिज योनि/जाति के अन्तर्गत आते हैं। इन सभी योनियों/जातियों का हम परिवर्तन नहीं कर सकते।

विभिन्न प्रकार की योनियों/जातियों में जीव का जाना अपने ही कर्मो का विपाक है। क्योंकि प्रारब्ध कर्म जब तक प्राणी के साथ हैं तब तक जाति-योनि, आयु और भोग तीनों को बदला नहीं जा सकता। पतंजलि ऋषि के अनुसार इन तीनों का सम्बन्ध हमारे कर्मो से है। इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र मात्र गुणवाचक शब्द हैं।

वर्तमान में फैले आरक्षण विरोधी एवं समर्थकों के विवाद को खत्म करना हो तो उपरोक्त वैदिक मान्यताओं के अनुसार हल ढूंढना अधिक उपयुक्त रहेगा। युवा शक्ति इस गंभीर समस्या का निराकरण चाहती है। सरकार को उपयुक्त कार्यवाही करनी होगी। इतिहास साक्षी है कि जब युवा संघर्ष की ओर बढ़ता है तो बड़ी-बड़ी सरकारें झुक जाती हैं।

अजय टंकारावाला

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2017 के चित्रों को देखने और डाऊनलोड करने के लिए इंटरनेट के माध्यम से www.facebook.com/ajaytankarawala पर जायें और लाइक व शेयर अवश्य करें।

यज्ञ की व्याख्या जैसा मैंने समझा

❒ खुशहाल चन्द्र आर्य

यज्ञ केवल अग्नि में घी, सामग्री, समीधा (लकड़ी) मन्त्रों सहित डालने का नाम ही नहीं है। यह तो केवल प्रतीक मात्र है बल्कि यज्ञ, वे सभी कार्य हैं जो परोपकार व जनहित की दृष्टि से किये जाते हैं वे सभी का कार्य हैं जो वे सभी यज्ञीय कर्म हैं। जैसे यज्ञ के करने वाले का घर तो सुगन्धित व पवित्र होता ही है, साथ ही यज्ञ करने वाले का पड़ोसी चाहे वह उसका शत्रु ही क्यों न हो उसको भी लाभ पहुंचता है। इसीलिए वेदों में 'यज्ञों वै श्रेष्ठतम कर्म ''कह कर यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म बताया है। वेद के एक दूसरे मन्त्र में कहा गया है कि ''स्वर्ग कामोयजेत'' यानी स्वर्ग की कामना रखने वाले को यज्ञ करना चाहिए। अर्थात् यज्ञ करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है जो मानव का परम लक्ष्य है।

यज्ञ शब्द यज्ञ धातु से बना है जिसका अर्थ है देवपूजा, दान व संगतिकरण। यह तीनों चीजें एक यज्ञीय परिवार पर लागु होती हैं। परिवार में तीन किस्म के सदस्य होते हैं। (1) छोटे बच्चे (2) माता-पिता, वृद्धजन तथा बाहर से आये विद्वान जन। (3) युवा भाई-बहिन। देव पूजा के दो अर्थ हैं। पहला अर्थ परिवार सम्बन्धी है यानी छोटे बच्चे यज्ञ करने के पश्चात खड़े होकर अपने माता-पिता, वृद्धजन व बाहर से आये विद्वानों को नतमस्तक होकर श्रद्धापूर्वक पैर-छूकर नमस्ते करके उनका आदर सत्कार करना। पूजा का अर्थ किसी का आदर सत्कार करना या किसी का सद्पयोग करना होता है, नाकि चन्दन रौली का टिक्का करके दीपक लेकर आरती उतारना होता है। पूजा के गलत अर्थ से केवल देश को ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति को बड़ी हानि उठानी पड़ी है। यही गलत पूजा अन्ध विश्वास व पाखण्ड को बढ़ाने में बड़ी सहायक सिद्ध हुई है। दूसरा अर्थ है पांच जड़ (अचेतन) देवता, वे हैं अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी और आकाश। इन पांचों जड़ देवताओं का मुख अग्नि है जिस प्रकार मुख से खाया हुआ अन्न, पेट में जाकर उसका रस व खून बनता है और फिर वह नस-नाड़ियों द्वारा पूरे शरीर में पहुंच कर शरीर को स्वस्थ्य बनाता है, उसी प्रकार हवन में डाला हुआ घी, सामग्री व समिधा उनकी सुगन्धी हजार गुणा बढ़कर पूरे वायुमण्डल यानी, जल, पृथ्वी, हवा व आकाश में फैल जाती है ओर उनको शुद्ध व पवित्र कर देती है। जिससे पूरा वायु मण्डल शुद्ध व पवित्र हो जाता है और प्रत्येक जीव के लिए स्वास्थ्यवर्धक बन जाता है। इसीलिए हमारे ऋषि मुनियों ने नित्य हवन (यज्ञ) करने का विधान बनाया है। यज्ञ करने का दूसरा कारण यह भी है कि प्रत्येक मनुष्य अपने मल-मूत्र, पसीना तथा अन्य तरीकों से वायुमण्डल के कुछ भाग को गंदा व अशुद्ध करता है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य बन जाता है कि उतना ही वह वायुमण्डल को शुद्ध व्यक्ति यज्ञ द्वारा करे ताकि पूरा वायुमण्डल शुद्ध बना रहे।

परिवार में दूसरे किस्म के सदस्य हैं माता-पिता व वृद्ध जन, जिनके लिए दान शब्द का प्रयोग हुआ है। इसका तात्पर्य यह है कि छोटे बच्चे जब हवन के बाद अपने माता-पिता तथा वृद्ध जनों का पैर छूकर सादर नमस्ते करके उनका आदर सत्कार करते हैं, तब उनका भी कर्तव्य हो जाता है कि वे बच्चों को आशीर्वाद देवें तथा अपने अनुभवों का ज्ञान देवें। इनको दान की संज्ञा दी है। दान वह होता है जो निःस्वार्थ भाव से, बिना कुछ लेने की आशा से दिया जाता है। इसलिए वृद्धजनों का आशीर्वाद को दान की संज्ञा दी है। इसका एक दूसरा भी रूप है कि किसी जरूरतमन्द को दान देना/यज्ञ एक परोपकारी कार्य हैं इसलिए वृक्षों को यज्ञ से दान देने की वृत्ति का भी विकास करना चाहिए।

यज्ञ का तीसरा अर्थ है संगतिकरण। संगतिकरण के भी दो अर्थ हैं। पहला अर्थ है कि परस्पर भाई-बहिन एक दूसरे से प्यार करे, साथ ही बड़ों का आदर सत्कार व छोटो से स्नेह व प्यार करें ताकि परिवार का वातावरण भेद-भाव, वैमनस्य रहित व प्यार भरा बना रहे तथा परिवार में सुख व शान्ति बनी रहे। इसका दूसरा अर्थ यह है कि यज्ञ में हर चीज का संगीत करण बना रहे, यानी सामग्री में जड़ी-बूटियों की मात्रा उचित हो, घी व सामग्री सही मात्रा में जैसा विधान है वैसे ही डाली जावे तथा उठने बैठने में भी संगतिकरण हो ताकि यज्ञ सुचारू रूप से चलता रहे और सभी हवन का पूरा लाभ उठा सके।

यहाँ यह बात भी बतलाना अति आवश्यक है कि यज्ञ को वेदों में ''अयं यज्ञो विश्वस्थ भुवनस्य नाभिः'' यानी यज्ञ को सम्पूर्ण विश्व की नाभि (केन्द्र) बताया गया है। जैसे पूरा शरीर नाभि से नियन्त्रित होता है, वैसे ही पूरा विश्व, यज्ञ से नियन्त्रित रहता है। इसीलिए यज्ञ की बड़ी महिमा है। यज्ञ हर व्यक्ति को नित्य करना चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ न कर सके तो कम से कम हर परिवार को तो नित्य हवन करना ही चाहिए ताकि परिवार का वातावरण शुद्ध व पवित्र बना रहे तथा परस्पर के व्यवहार में प्रेम बना रहे।

मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि मुझे पितृकुल तथा श्वसुर कुल दोनों ही बड़े पक्के आर्य समाजी परिवार मिले। मेरे स्व. पिता गोविन्द राम आर्य, जिनको लोग श्रद्धा से ''प्रधान जी'' के नाम से सम्बोधित करते थे। वे एक दृढ़ आर्य समाजी व पक्के ऋषि भक्त थे। उन्होंने अपने 81 वर्षीय जीवन में अनेकों परोपकारी व समाज सुधार के काम किये, जिनमें आर्य कन्या पाठशाला का बीस वर्षो तक एक बड़ी अच्छी अध्यापिका लाकर बड़े अच्छे ढंग से चलाना, बच्चों को दसवीं तक पढ़ाने के लिए धन एकत्रित करके एक अच्छी बिल्डिंग बना कर सरकार को देना, गांव में पोस्टऑफिस खुलवाना, अकाल के समय गरीबों की मदद करना व सैकड़ों गऊओं को मृत्यु से बचाना, ढोग, आडम्बरों व पाखण्डों का डटकर विरोध करना, गो व हिन्दी रक्षा के आन्दोलनों में शामिल होकर जेल दी यातनाएं सहना तथा जो सबसे बड़ा उन्होंने काम किया। वह है 8-10 बाल विधवाओं को योग्य पतियों के साथ पुनर्विवाह करवाकर उनका जीवन सुखी बनाना ही नहीं, साथ ही तीन बाल विधवाओं का अपने एक सुपुत्र व दो सुपौत्रों से विवाह करके अपने घर की बहु बनाकर अग्रवाल समाज में एक उदाहरण पेश करना मुख्य था। वे नित्य सन्ध्या व साप्ताहिक पारिवारिक यज्ञ भी करते थे। मेरी धर्म पत्नी विमला देवी के दादा जी, जिनका नाम भालाराम जी था और सभी लोग उन्हें आदर व सम्मान से ''मन्त्री जी'' कहते थे। वे नित्य दोनों समय सन्ध्या व हवन करके ही भोजन करते थे। यात्रा में भी यज्ञ का पूरा सामान एक झोले में रखते थे और दोनो समय सन्ध्या, हवन करके ही भोजन करते थे। वे सन् 1939 में हैदराबाद सत्याग्रह और 1957 में हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी भाग लेकर जेल की यातनाएं झेली थी। वे पक्के ऋषि भक्त व सच्चे आर्य समाजी थे। उनका जीवन भी पूर्ण संयमी था। हरियाणा के भजनोपदेशक अपने भजनों में उनका सच्चे आर्य के रूप में उदाहरण पेश करते थे। ऐसे आर्य समाजियों से हमें शिक्षा लेनी चाहिए।

- गोविन्द राम आर्य एण्ड संस, 180 महात्मा गांधी रोड, द्वितीय मंजिल, कोलकत्ता-700007,

दयानन्द का दीवाना पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी

❒ स्व. आचार्य भगवान देव

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुलतान में हुआ था। आपके पिता का नाम रामकृष्ण था। लाला रामकृष्ण फारसी के बड़े आलिम थे। आपका बचपन का नाम मूला था। 12 वर्ष की उम्र में पण्डितजी अपने पिता के साथ हरिद्वार गए। वहां स्वामी राधेश्याम ने उनका नाम गुरुदत्त रख दिया। आगे चलकर आप गुरुदत्त बने।

गुरुदत्त के पिता स्कूल मास्टर थे। उन्होंने अपने पुत्र को शिक्षा घर में ही दी। 8 वर्ष की उम्र में आप स्कूल में भर्ती हुए। आपने मिडिल परीक्षा झंग से और मैट्रिकुलेशन परीक्षा मुलतान से पास की। 1881 में गुरुदत्त का स्कूल जीवन समाप्त हुआ। हिन्दी पढ़ने में आप तेज थे। अध्यापक और इन्सपेक्टर इस होनहार युवक को देखकर आश्चर्यचकित होते थे। पढ़ने के साथ शारीरिक व्यायाम का कोई सम्बन्ध नहीं परन्तु गुरुदत्त जी को विद्यार्थी अवस्था में कसरत का खूब शौक था। धार्मिक जीवन की ओर गुरुदत्त जी की बचपन से ही प्रवृत्ति थी। योग की धुन में हरेक साधु की सेवा करते थे।

मुलतान में एण्ट्रेन्स की परीक्षा की तैयारी के समय गुरुदत्त के हृदय में वेद पढ़ने की धुन पैदा हुई और 20 जून 1880 के दिन आप आर्यसमाज के सभासद बने।

सन् 1881 के जनवरी मास में गुरुदत्त जी लाहौर गवर्नमेंट कालिज में भर्ती हुए। मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में प्रान्त भर में आपका पांचवां स्थान था।

कॉलिज में जाकर प्रतिभाशील युवक को अपनी युवक को अपनी कुशाग्रबुद्धि का सिक्का जमाते देर न लगी। कॉलिज का दूसरा वर्ष समाप्त होने से पूर्व आपका दिमाग पश्चिम के दर्शन और विज्ञान की ओर गया। जान स्टुआर्ट मिल में आपको बहुत भक्ति थी, ब्रैडला की युक्तियों दिमाग में घुसकर विश्वास की जड़ों को हिलाते रहने का यत्न कर रही थीं। डार्विन और बेन का आपने खूब पाठ किया और बेन्थन के तत्वावधान को पसंद किया। उस समय युरोप का जलवायु हेतुवाद के परमाणुओं से भरपूर हो रहा था। एक ओर से विकासवाद और दूसरी ओर से अनीश्वरवाद के बलवान् आक्रमण विश्वास के किलों की ईंट से ईट बजा रहे थे।

1882 के आरम्भ में गुरुदत्त ने एक की डिबेटिंग क्लब की स्थापना की, जिसमें गम्भीर विषयों पर बहस हुआ करती थी। गुरुदत्त उसके मन्त्री थे। वे प्रायः विवाद में उल्टा पक्ष लिया करते थे। कोई धार्मिक या सामाजिक विषय विवाद की सीमा से नहीं छूट सकता था।

पं. गुरुदत्त जी ने अपने दो अन्य मित्रों के साथ मिलकर 'दी रीजनरेटर ऑफ आर्यावर्त, नाम के अखबार का प्रकाशन किया।

1883 के अक्तूबर मास में स्वामी दयानन्द की भयानक बीमारी का संवाद देश भर में फैल गया। भक्तों के हृदय कांप उठे। समाचार फैल गया कि किसी ने जहर देकर ग्रहण लगाने की चेष्टा की है स्वामी उस समय अधिक रोगी होकर अजमेर में आ गए थे। लाहौर की आर्यसमाज की ओर से दो प्रतिनिधि, स्वामी को देखने और सेवा करने के लिए रवाना करने का निश्चय हुआ। एक लाला जीवनदास जी चुने गए दूसरा चुनाव गुरुदत्त जी का हुआ।

गुरुदत्त जी ने उसे देखा। देखा तो बहुतों ने, परन्तु जैसा उस जिज्ञासु युवक ने देखा वैसा शायद किसी की दृष्टि में भी न आया। जिज्ञासु ने उस मृत्यु में ब्रह्मचर्य के बल को, योग की महिमा और ईश्वर विश्वास के गौरव को देखा। उसने देखा कि जिसे लोग वियोग कहते हैं वह एक विश्वासी आत्मा के लिए योग है। जिसे साधारण पुरुष सबसे बड़ा दुख कहते हैं, उसे एक योगी प्रियप्राप्ति का आनन्द समझता है। उसने उस ब्रह्मचारी को मृत्यु के समय आदित्य से अधिक तेजस्वी, पर्वत से अधिक मजबूत और प्रभात से अधिक आनन्दित देखा। पंडित गुरुदत्त एक जिज्ञासु आत्मा बनकर लाहौर से चले थे और सच्चे विश्वासी बन अजमेर से लौटे।

उसी वर्ष गुरुदत्त ने 1883 के आरम्भ में एम.ए. की परीक्षा देने वालों में सबसे अधिक नम्बर पाए। पंजाब यूनिवर्सिटी के इतिहास में उस समय यह अपनी तरह की पहली और अपूर्व घटना समझी गई। गुरुदत्त की धाक प्रांत भर में बैठ गई।

अजमेर से दृढ़ आस्तिक बनकर गुरुदत्तजी जब लाहौर में आए तो आर्य पुरुषों में स्वामी की यादगार को स्थापित करने का प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई। डी.ए.वी. कॉलिज की स्थापना का निर्णय लिया गया। गुरुदत्तजी ने कॉलिज को अपनी सेवाएं दी।

किसी एक धुन के सिवा मनुष्य कोई बड़ा काम नहीं कर सकता। धुन भी इतनी कि दुनिया उसे पागल कहे। उसे योग और वेद की धुन थी। अब गुरुदत्त जी स्कूल में पढ़ते थे, तभी से उन्हें शौक था योगी होने का। प्राणायाम का अभ्यास आपने बचपन से ही आरम्भ कर दिया था।

अजमेर में योगी की मृत्यु को देखकर योग सीखने की इच्छा और भी अधिक भड़क उठी। लाहौर पहुंचकर आपने योग दर्शन का स्वाध्याय आरम्भ कर दिया।

गुरुदत्त को दूसरी धुन थी, वेदों का अर्थ समझने की। वेदों पर आपकी असीम श्रद्धा थी। वेदाभ्यास का आप निरन्तर अनुशीलन करते थे। जब अर्थ समझने में कठिनता प्रतीत होने लगी तब अष्टाध्यायी और निरूक्त का अध्ययन आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे अष्टाध्यायी का स्वाध्याय आपके लिए सबसे प्रथम कर्त्तव्य बन गया। क्योंकि आप उसे वेद तक पहुंचने का द्वार समझते थे। आपका शोक उस नौजवान समूह में भी प्रतिबिम्बित होने लगा, जो आपके पास रहा करता था। अष्टाध्यायी, निरूक्त और वेद स्वाध्याय निरंतर चलता रहा।

डी.ए.वी. कॉलेज की शिक्षा से असन्तुष्ट होकर कुछ लोगों ने एक दूसरी संस्था चलाने का निश्चय किया।

बहुत से आर्यपुरुषों को डी.ए.वी. कॉलिज में आर्यग्रन्थों की पढ़ाई न होने की शिकायत थी।

जुलाई 1889 में गुरुदत्त ने 'वैदिक मैगजीन' नाम का मासिक पत्र निकालना आरम्भ किया। इससे पूर्व वे आर्यपत्रिका में प्रायः लिखते रहते थे। अंग्रेजी के विद्वानों में आपके लेख पसन्द किए जाते थे। युरोप के संस्कृतज्ञ वैदिक साहित्य के विषय में जो असम्बन्ध या प्रमाणरहित लेख लिखते थे, पण्डितजी उनका प्रतिवाद निकालते रहते थे। मैगजीन ने तो आपकी धाक ही बांध दी। वैदिक मैगजीन एक मासिक पत्रिका थी, परन्तु पाठक उसकी आजकल के मासिक पत्रों से उसकी तुलना न करें। वह एक प्रतिभासम्पन्न विचारक के मास भर के दिमागी व्यायाम

का परिणाम होता था। वेदमन्त्रों की उपनिषदों की और अन्य आर्यग्रन्थों की व्याख्या होती थी और वैदिक सिद्धान्तों पर योग्यतापूर्ण लेख होते थे। जिन दिनों वैदिक मैगजीन लिखी जाती थी, उन दिनों पण्डित जी कोई समाचार पत्र नहीं पढ़ते थे। रात-दिन स्वाध्याय और विचार में लगे रहते थे। स्वाध्याय के सिवा बस दो ही काम थे। कभी-कभी बाहर उत्सवों पर व्याख्यान के लिए जाना पड़ता था और लाहौर शंका-समाधान के लिए भी समय देना पड़ता था।

जो बरसात समय से पहले आ जाती है वह शीघ्र ही समाप्त हो जाती है। गुरुदत्त जी में प्रतिभा समय से पूर्व ही बरस पड़ी थी। 19 वर्ष की अवस्था का विद्यार्थी पंजाब की आर्यसमाज का प्रतिनिधि बनाकर अजमेर भेजा गया था। 24वां वर्ष की अवस्था में एम.ए. को गर्वनमेंट कॉलिज में साइन्स का बड़ा अध्यापक नियुक्त कर दिया जाता है। कार्य की धुन में शरीर की चिन्ता छोड़ दो। जिस काम में लगे, उसके सिवा सब कुछ भुला दिया।

जवानी में आपका शरीर अच्छा मजबूत था। ईश्वरीय नियमों के उल्लंघन ने उसे शिथिल कर दिया। वैदिक धर्म की धुन ने इस दुनिया को तोड़ डाला। प्रतीत होता है कि गुरु के बिना प्राणायाम के परिश्रम ने भी शरीर पर कुछ बुरा प्रभाव उत्पन्न किया। प्रचार के लिए कई वर्षो तक आपको निरन्तर दौरा लगाना पड़ा। इन सब कारणों से आर्यसमाज की आशाओं के केन्द्र उस होनहार नवयुवक को क्षय रोग ने आ घेरा। 1889 के मध्य से भक्तों और मित्रों को मालूम हुआ कि आप बीमार हैं। डाक्टरी, यूनानी और आयुर्वेदिक सभी तरह के इलाज किए गए, परन्तु रोग बढ़ता ही गया। जब अन्त समय आया, तब आप ने अन्तिम हवन करवाया और स्वयं वेदमन्त्रों का उच्चारण किया। 19 मार्च 1989 ई. को प्रात: 7 बजे ईश्वर का स्मरण करते हुए बड़ी शान्ति के साथ प्राणों का परित्याग किया। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी 26 वर्ष की अल्प आयु में इस लोक से प्रयाण कर चिर निद्रा में लीन हो गये।

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

-: निवेदक :-

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

क्रान्ति वीर सुखदेव

❐ पं. रामदेव शर्मा

मि. हयूम के मानस पुत्र नेशनल कांग्रेस देश की आजादी के बाद से ही रट लगाये हुये है देश गांधी बाबा के असहयोग आन्दोलन व अहिंसा के मार्ग पर चल कर भारत स्वतन्त्र हुआ मगर यह वास्तविक तथ्य नहीं है। यदि ऐसा होता तो भारत के अभिन्न अंग कश्मीर में खूब आन्दोलन व असहयोग वहां के मुस्लिम लोग कर रहे है क्या भारत सरकार कश्मीर को आजाद कर देगी? इसी प्रकार नेहरू की त्रुटि पूर्ण रवैये (निति) के कारण भारत के अभिन्न अंग पाक अधिकृत कश्मीर में आन्दोलन हो रहे है बिना युद्ध के पी.ओ.के. को पाक कश्मीर को आजाद कर देगा?

भारत की आजादी के निमिन्त वालिदानियों की लम्बी श्रृंखला की कड़ी में एक वीर बलिदानी जिनका नाम इतिहास में सुखदेव के नाम से प्रसिद्ध है कि जयन्ती के अवसर पर हम हृदय के अन्तस्थल से नमन करते हुये श्रद्धा सुमन अर्पित करते है।

विश्व के सभी प्राणीयो को स्वतन्त्रता (आजादी) अति प्रिय हैं, चाहे मनुष्य हो, पशु-पक्षी या जलचर हों जब भी उनकी स्वतन्त्रता छिनी तो आजादी पाने के लिए संघर्षरत रहते हैं और यदि स्वाभीमानी पुरुष है तो वह आजादी पाने के लिए तन, मन, धन, यहां तक की अपना सर्वस्व न्याछावर वार देश के लिए बलिदान देने में भी पीछे नहीं रहते। ऐसे ही एक विचित्र क्रांन्तिकारी पंजाब प्रान्त के लायलपुर नामक स्थान पर पन्द्रह मई सन् 1907 में (दर्भाग्य से जो अब पाकिस्तान में हैं) जन्म हुआ। सुखदेवे के जन्म के मात्र 3 माह के पूर्व ही पिता श्री राम लाल का देहान्त हो गया। उनके लालन पालन का बोज उनकी मां पर आ पड़ा। विधवा मां धार्मिक प्रवृत्ति की कुशल महिला थीं जो आर्यसमाज के प्रति पूर्ण समर्मित होने के कारण शिशु सुखदेव में धैर्य, निष्ठा और आध्यात्मिक आस्था के अंकुर बोती रहती थी। आर्य समाजी वातावरण में पले बढ़े सुखदेव में परिवार के गुण तो आये ही साथ में निडरता और साहस का अटूट संगम भी दृष्टि गोचर होने लगा।

प्रारम्भिक शिक्षा धनपतमल आर्य स्कूल में प्रारम्भ हुई, हाई स्कूल की परीक्षा के लिये सनातन धर्म हाई स्कूल में भर्ती हो प्रवेशिका परीक्षा सन् 1922 में द्वितीय श्रेणी में पास की।

सुखदेव जब केवल बारह वर्ष के थे तब उनके चाचा जो गल्ला व्यवसाई थे जिनका सहयोग भतीजे को आवश्यकतानुसार मिलता रहता था को सरकार विरोधी गतिविधियों के कारण गिरफ्तार कर लिया गया। सुखदेव तब समझे कि भारत पर विदेशियों का शासन है जो उनका अधिकार नहीं हैं गौरो से देश का छुड़ाना जितनी शीघ्रता हो उतना ही अच्छा है।

बालक का हृदय गोरों के प्रति धृणा से भर गया और मन ही मन अंग्रेजो को देश से बाहर निकाल कर मां भारती को स्वतन्त्र कराने का प्रण कर लिया। जब वे कक्षा 9 के विद्यार्थी थे तब ब्रिटिश सरकार ने आदेश निकाला की विद्यालय के समस्त छात्र-छात्राएं एक स्थान पर सकत्रित हो ब्रिटिश झण्डे को नित्य प्रति अभिवादन करेगे। उन्होंने अभिवादन का बहिस्कार स्वयं व अन्य छात्र/छात्राओं से कराया और सारी कहानी अपने चाचा का जो सुनाई। चाचा ने सुखदेव की निडरता और साहस की प्रशंसा करते हुए समझाया कि ऐसी ही लगन और जागरूकता से देश भक्त बनने की सीढ़ी है। मुझे मेरे भतीजे पर गर्व है। खूब पीठ थप थपाई। सुखदेव जब नेशनल कॉलेज लाहौर में अध्ययनरत थे तभी देश में स्वतन्त्रता संग्राम का बिगुल बज रहा था। जगह-जगह आन्दोलन हो रहे थे। जुलूस और सभाये हो रही थी, ऐसे में सुखदेव कैसे शान्त रह सकते थे। इसी दरमियान सुखदेव का सम्पर्क वीर सरदार भगत सिंह, भगवती चरण वोहरा, राजगुरु आदि से हुआ। उन्हीं दिनों सन् 1921 में गांधी बाबा ने भी असहयोग आन्दोलन, विदेशी वस्तुओं का बहिस्कार कर होली जलाना, स्वदेशी का धारण करना आन्दोलन चरम पर था। उक्त सभी नौ जवान बड़ चढ़ कर हिस्सा ले रहे थे। आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा था, नौ जवानो के जत्थे के जत्थे बढ़ते जा रहे थे। बाबा को अपना नेतृत्व संकट मैं जान पड़ा उन्होंने आन्दोलन वापिस ले लिया, नौ जवानों को बड़ी निराशा हुयी और अहयोग अहिंसक आन्दोलन के नारे से नया खून निराश हो गया। अहिंसा द्वारा अंग्रेजो को भारत से निकालने की बात असंभव लगने लगी। अतः वीर शिरोमणि चन्द्र शेखर आजाद, सरदार भगत सिंह, भगवती चरण वोहरा आदि ने लाहोर में नौजवान भारत सभा की स्थापना की जिसमें सुखदेव सक्रिया सदस्य हुये।

नौ जवान भारत सभा एक ऐसा खुला मंच था जो अपने विचारो योजनाओं से जनता को रूढ़िवादिता, कुत्सित अन्ध विश्वास एवम् समाज में फैली बुराइयों को दूर कर अंग्रेजो के नापाक इरादो का पर्दाफाश कर अपना प्रमुख लक्ष्य देश को आजाद करने के लिए जनता में राष्ट्रीयभाव जागृत करना था इस कार्य के लिए समय असमय आना जाना पड़ता था। अधिकांश कार्य रात्रिवेला में होते थे अतः कॉलेज के होस्टल वार्डन सुखदेव को शंकालु दृष्टि से देखने लगा, पूछताछ करने लगा। सुखदेव को लक्ष्य में रूकावट महसूस हुयी अतः स्वच्छन्दता पूर्ण कार्य करने हेतु उन्होंने होस्टल छोड़ दिया।

सुखदेव अपनी मर्जी के धुनी हरफन मौला प्रवृत्ति के युवक थे। मन में एक दिन विचार आया कि क्रान्ति कारियों को बलिष्ठ एवम् सहनसील होना अत्यन्त आवश्यक है। परीक्षण करना चाहिए, एक दिन मार्ग में खड़े सिपाही के गाल पर कस कर चांटा जड़ दिया। अन्य सिपाहियों ने अपने घेरे में लेकर तबियत से मरम्मत करना शुरु कर दी, मार पड़ती रही मुंह से उफ तक नहीं निकला, घायल अवस्था में वापिस लौटने पर अपनी पिटाई की कहानी भगत सिंह को सुना दी, भगत सिंह ने प्रश्न किया कि अब किसी सिपाही ने तुम्हें छेड़ा ही नहीं तो अनावश्यक पंगा लेने की क्या जरूरत थी, कही पागल कुत्ते ने तोनहीं काटा था? निश्छल मुस्कान भरी मुद्रा में आहत स्थलों पर सेक देते हुए मौन साध लिया, फिर बोले ऐसा कुछ नहीं था, फिर क्या पहाड़ टूट पड़ा था आखिर कोई तो कारण होगा? 'अजमाइश अभ्यास कि क्रान्तिकारी कितनी कष्टप्रद यातनाये सहन कर सकता हैं। मैं केवल यह चाहता था कि सुखदेव कितनी मार खा कर मुख नहीं खोल सकता है। हर परीक्षण कुछ न कुछ देता ही है। सो थोड़ा साहब भी जूटा कि मार खाने ब्रिटीश सरकार ने भारतीयों को मूर्ख बनाने के लिए भारत में सरकारी प्रशासन सुधार हेतु एक साइमन कमीशन भेजा उसके विरोध हेतु एकान्त कमरे में काले झण्डे तैयार किया जा रहे थे कि पुलिस को सुराश लग गया और पुलिस ने छापा मारा, उस समय 5-6

क्रान्तिकारी तो भाग निकले पर सुखदेव पकड़े गए। पुलिश खुश चलो एक तो पकड़ा गया। इसी से सब भेद खुलवालेगे। घन्टो नाना प्रकार की यातना देने के बाद भी पुलिस सुखदेव से कोई जानकारी हासिल नहीं कर सकी। सुखदेव ने यह सिद्ध कर दिया कि क्रान्तिकारी मर तो सकता है पर झुक नहीं सकता। क्रान्तिकारी फौलादी होते है।

लाला लाजपत राय ने साइमन कमीशन के विरोध में जुलूस का नेतृत्व किया, उन पर लाठीयो से भीषण प्रहार हुआ परिणाम स्वरूप दूसरे दिन उनका हो गया। इस दुर्घटना से क्रान्तिकारी चुप नहीं बैठ सके, क्योंकि लाला ली की मृत्यु को राष्ट्रीय अपमान समझा। खून के बदले खून की योजना बनाई, ईट का जवाब पत्थर से देना चाहते थे। भगत सिंह व राजगुरु, सुखदेव ने पुलिस अधिकारी सान्डस की गोली मार कर हत्या कर दी। पुलिस पीठे पड़ गयी, सरदार भगत सिंह ने अपनी डाड़ी मूछ मुडवा दी और हैड, टाई में टोनो सुशोभित हो लाहौर से इस्लामाााबाद तक सुरक्षित पहुंच गये। कुछ दिन शान्ति से रहकर सैन्डर्स हत्या के बाद कोई बड़ा धमाका कर अंग्रेजो की नींद उड़ाने के लिये दल के सदस्यो में सुखदेव ने चर्चा चलाई और असेम्बली भवन पर बम फैकन की योजना बनाई। इस योजना को चन्द्रशेखर आजाद से अनुमति मिल गयी। 8 अप्रैल 1929 को असैम्बली भवन में बम विस्फोट कर पर्चे बांटते हुए पकड़े गयें मुकदमा चला। 7 अक्टूबर 1930 को स. भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव को फांसी की सजा दे दी गयी। परिणाम स्वरूप पूरे देश में इन सपूतो की रिहायी के लिए सभाए, धरने, मशालों की जुलुश निकाले, जनता तो अपना पुर जोर विरोध सरकार के सम्मुख प्रकट किया किन्तु गांधी बाबा व उनके अनुयायी गागरेट कांग्रेसी इस विषय पर चुप ही रहे। अन्ततः 23 मार्च सन् 1931 को लाहौर की केन्द्रिय जेल में सरदार भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव ने वन्दे भारतम का जय घोष करते हुए फांसी के फन्दे को चूमा। इन तीनों क्रान्तिवीरो को शत्-शत् नमन करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

- सदस्य आर्य समाज भीम गंज मण्डी, कोटा जंक्शन, मो. 9460676545

प्रसाद का अर्थ क्या है?

प्र-प्रभु के, सा-साक्षात्, द-दर्शन

हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है और कोई भी अक्षर वैसा क्यूँ है उसके पीछे कुछ कारण है, अंग्रेजी भाषा में ये बात देखने में नहीं आती।

क, ख, ग, घ, - कंठव्य कहे गए, क्योंकि इनके उच्चारण के समय धवनि कंठ से निकलती है।

एक बार बोल कर देखिये।

च, छ, ज, झ, ञ- तालव्य कहे गए, क्योंकि इनके उच्चारण के समय जीभ तालू से लगती है। एक बार बोल कर देखिये।

ट, ठ, ड, ढ, ण- मूर्धन्य कहे गए, क्योंकि इनका उच्चारण जीभ के मूर्धा से लगने पर ही सम्भव है। एक बार बोल कर देखिये।

त, थ, द, ध, न- दंतीय कहे गए, क्योंकि इनके उच्चारण के समय जीभ दातों से लगती है। एक बार बोल कर देखिये।

प, फ, ब, भ, म,- ओष्ठ्य कहे गए, क्योंकि इनका उच्चारण ओठों के मिलने पर ही होता है। एक बार बोल कर देखिये।

हम अपनी भाषा पर गर्व करते हैं ये सही है परन्तु लोगो को इसका कारण भी बताईये। इतनी वैज्ञानिकता दुनिया की किसी भाषा मे नही है जय हिन्द क,ख,ग क्या कहता है जरा गौर करें....

क-क्लेश मत करो, **ख**-खराब मत करो

ग-गर्व ना करो, **घ**-घमण्ड मत करो

च-चिँता मत करो, **छ**-छल-कपट मत करो

ज-जवाबदारी निभाओ, **झ**-झूठ मत बोलो

ट-टिप्पणी मत करो, **ठ**-ठगो मत

ड-डरपोक मत बनो, **ढ**-ढोंग ना करो

त-तैश मे मत रहो, **थ**-थको मत

द-दिलदार बनो, **ध**-धोखा मत करो

न-नम्र बनो, **प**-पाप मत करो

फ-फालतू काम मत करो, **ब**-बिर्गा मत करो

भ-भावुक बनो, **म**-मधुर बनो

य-यशश्वी बनो, **र**-रोओ मत

ल-लोभ मत करो, **व**-वैर मत करो

श-शत्रुता मत करो, **ष**-षटकोण की तरह स्थिर रहो

स-सच बोलो, **ह**-हँसमुख रहो

क्ष-क्षमा करो, **त्र**-त्रस मत करो

ज्ञ-ज्ञानी बनो !!

कृपया इस ज्ञान की जानकारी सभी को अग्रेषित करें।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. सत्यपाल 'पथिक' (अमृतसर)
के सुपुत्र श्री दिनेश आर्य ''पथिक''
अब दिल्ली में भी भजन सेवा हेतु उपलब्ध

आर्य जनता को जानकर प्रसन्नता होगी **श्री दिनेश आर्य पथिक** दिल्ली में पूर्ण स्थायी रूप से आ गए हैं। दिल्ली एवम् निकटवर्ती क्षेत्रों के आर्य समाजों से प्रार्थना है कि भजन संध्या, वार्षिकोत्सव/शान्ति सभा आदि कार्यक्रमों के लिए उनकी सेवाओं का लाभ उठाए। **सम्पर्क- मो. 09855098530, 09872955841**

नौकरी से रिटायर/जिन्दगी से रिटायर नहीं

❒ आशा गुप्ता

कुछ दिन पूर्व की बात है कि जैसे ही मैं बैंक जाने के लिए तैयार होकर घर से निकली, एक पड़ोसन ने पूछा, 'आप तो रिटायर हो चुकी हैं न? अब कहां जा रही हो तैयार होकर? क्या कोई दूसरी नौकरी पकड़ ली है?' उसने ऐसे ही कई और प्रश्न एक साथ दाग दिए। मुझे बैंक जाना था और वहां पहुंचने की जल्दी थी फिर भी संक्षिप्त सा जवाब दिया कि मैं नौकरी से रिटायर हुई हूँ, जिन्दगी से नहीं। लेकिन उसके द्वारा पूछे गए प्रश्न मेरा पीछा करते रहे। पहलुओं के बारे में सोचने पर मजबूर करते रहे। क्या रिटायर्ड व्यक्ति का घर में पड़े रहना जरूरी है? वह जहां भी जाए क्या उसे पहले की तरह ही तैयार होकर घर से निकलने के बजाय मैले-कुचले या बिना प्रेस किए कपड़े पहन कर ही बाहर चले जाना चाहिए? क्या रिटायरमेन्ट के बाद निष्क्रिय होकर घर में बैठना अथवा कोई दूसरी नौकरी पकड़ लेना ये दो ही विकल्प हैं?

कई लोग सोचते हैं कि रिटायरमेन्ट के बाद अच्छे कपड़े-जूते पहनने या स्वयं को मेंटेन करने की क्या जरूरत है? इसी सोच के कारण कुछ लोगों का जीवन अत्यंत नीरस हो जाता है। ऐसे लोग समाज द्वारा बेकार की चीज समझकर उपेक्षा रूपी कबाड़खाने में डाल दिए हैं। बातचीत करने के बजाय सब ऐसे लोगों से कतराकर निकल जाते हैं। जब हम अपने आपको मेंटेन करके रखते हैं तभी जीवन में सक्रियता के कारण हम चिंतामुकत व स्वस्थ रहते हैं। निष्क्रियता के कारण हम चिंतामुक्त व स्वस्थ रहते हैं। निष्क्रियता अथवा उत्साहहीनता के कारण ही हम बीमारियों को आमंत्रित करते हैं। रिटायरमेन्ट का अर्थ जीवन के प्रति उपेक्षा नहीं होता। व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए सदैव स्वच्छ व क्रियाशील बने रहना चाहिए। अत: उसके लिए घर के कामों के साथ-साथ बाहर के कामों में रूचि लेकर उन्हें करना आवश्यक है अन्यथा जीवन नीरस हो जाएगा। यदि एक रिटायर्ड व्यक्ति सलीके से रहता है तो न केवल उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली बना रहता है अपितु उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

कई बार घर की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है और बच्चे अथवा घर के अन्य सदस्य कहते हैं कि अब आपको सिर्फ आराम करना है, काम नहीं। उनकी भावनाएं अच्छी हैं। उनकी भावनाओं को भी महत्त्व दीजिए लेकिन काम करना कभी मत छोड़िए। लंबे समय में जब तक हम घर व समाज के लिए उपयोगी होते हैं तब तक अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण बने रहते हैं। एक स्थिति ऐसी भी आती है कि बिना किसी उपयोगी कार्य के हम बोझ लगने लगते हैं। कोई कुछ न भी कहे तो भी परोक्ष रूप से उपेक्षा प्रारंभ हो जाती है। अत: घर व समाज में अपना महत्त्व बनाए रखने के लिए भी उपयोगी बने रहना जरूरी है और यह तभी संभव है जब हम कुछ उपयोगी अथवा अर्थपूर्ण कार्य करते हुए व्यस्त रहें। घर में छोटे बच्चे हैं तो होमवर्क करने में उनकी मदद करें व उन्हें कुछ उपयोगी कुशलताओं का अभ्यास करवाएँ। यदि घर में कोई भी काम नहीं है तो नियमित रूप से टहलने अथवा प्रात: भ्रमण की आदत बनाएँ। बागबानी अथवा अन्य कोई हॉबी विकसित करें लेकिन किसी भी कीमत पर खाली न बैठें। व्यस्तता व सक्रियता के साथ-साथ समय भी आराम से व्यतीत होगा।

यदि रिटायरमेन्ट के बाद आपके पास काफी समय है तो उसका अच्छे से अच्छा उपयोग कीजिए। हो सकता है कि नौकरी के दौरान काम के बोझ के कारण तनाव व घर व ऑफिस में सामंजस्य बनाने की समस्या रही हो। रिटायरमेन्ट के बाद उससे पूरी तरह मुक्ति का अनुभव कीजिए। शेष जीवन को अपनी इच्छाओं व संसाधनों के अनुसार उत्कृष्टता प्रदान करने की कोशिश कीजिए। पहले समय की कमी के कारण जो कार्य भाग-दौड़ में निपटाने पड़ते थे, अब इत्मीनान से कीजिए। घर को नए ढंग से सजाइए। दैनिक खानपान में कुछ विविधता पैदा कीजिए। हर क्षण को अधिकाधिक गुणवत्तापूर्ण व कलात्मक बनाने का प्रयास कीजिए। कभी-कभी पुराने मित्रों व सहकर्मियों को आमन्त्रित कीजिए और पुराने दिनों को याद करने के साथ-साथ अपने अर्जित अनुभवों का आदान-प्रदान व हंसिए-हंसाइए। ये चीजें आपको तरोताजा करने मं सहायता करेगी।

रिटायरमेन्ट के समय संस्थान अथवा सहकर्मी उपहार के रूप में प्राय: गीता आदि कुछ धार्मिक पुस्तकें व क्रीम कलर अथवा हल्के मटमैले कलर की शॉल वगैरा देते हैं। रिटायरमेन्ट काये अर्थ नहीं है कि अब हम भविष्य में अच्छे रंगीन कपड़े नहीं पहन सकते या मनपसंद पुस्तकें नहीं पढ़ सकते और शेष जीवन में सिर्फ तथाकथित धार्मिक पुस्तकें ही पढ़नी हैं, मंदिर जाना है अथवा भजन-कीर्तन में ढोलकी या चिमटा बजाना है। यदि आप अपने आध्यात्मिक विकास के लिए कुछ करना चाहते हैं तो बड़ी अच्छी बात है लेकिन रिटायरमेंट के दिन से क्यों? ये तो आप अपनी इच्छा से पहले भी कर सकते थे लेकिन कुछ लोग अपनी अज्ञानता के कारण रिटायर होने वाले लोगों पर गलत विचार थोपने का प्रयास करते हैं। इसे कभी स्वीकार मत कीजिए और पहले की तरह ही काम करते रहिए। ऑफिस तो जाना नहीं होगा लेकिन अन्य सभी आयोजनों में अवश्य जाते रहिए।

पठन-पाठन व लेखन में रूचि रखने वालों के लिए तो रिटायरमेंट एक बहुत बड़ा अवसर है। आप किसी पुस्तकालय में जाकर वहां पढ़ सकें तो ठीक है अन्यथा घर पर ही अच्छा साहित्य व प्रेरणास्पद साहित्य लाकर या मंगवाकर पढ़िए। आप बेशक रिटायर हो गए हैं लेकिन टाइम पास करने के लिए कुछ भी पढ़ने के बजाय केवल जीवनोपयोगी साहित्य ही पढ़िए जिससे आपको अपने जीवन को और ज्यादा बेहतर बनाने की प्रेरणा मिलती रहे। सुविधा व आयु के अनुसार अच्छे से अच्छे कपड़े जीवन भर सूट-सलवार या साड़ी पहनी हो तो अब आप जींस और ऐसे टॉप्स पहनें जिससे फूहड़ता प्रदर्शित हो और आप उपहास के पात्र बन जाएं। यहां भी गुणवत्ता के साथ-साथ शिष्टता का ध्यान रखिए। हर चीज सुरूचिपूर्ण हो। वह आपके व्यक्तित्व को संवारे, न कि धूमिल करे। सादगी, शिष्टता व सौम्यता स्वयं में बहुत बड़ा फैशन है। हर कार्य समझदारी से इस प्रकार से करें जिससे जीवन एक उत्सव में परिवर्तित हो सके।

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com
पर उपलब्ध है

परिवार में बुजुर्ग व्यक्ति की आवश्यकता

❒ सत्यनारायण भटनागर

आजकल एकल परिवारों का चलन हो गया है। हम दो और हमारे दो ही परिवार के अंग मान लिए गए हैं। व्यक्तिगत सुख की इस चाह ने परिवार की परिभाषा ही बिगाड़ कर रख दी है। परिवार प्रेम, सहयोग, त्याग सीखने की एक पाठशाला होती थी। घर की अंगीठी के पास बैठ कर ये गुण अनायास सीखे जाते थे। किन्तु आज वह बात कहां? घर के बुजुर्ग भी इस वातावरण को समझ गए हैं इसलिए बहुत से बुजुर्ग तमाम कठिनाइयां झेलते हुए भी अकेले रहना पसंद करते हैं और परिवार से दूर रहते हैं। क्या यह स्थिति परिवार और देश के हित में है। आइए विचार करें।

श्री 'क' का अभी-अभी विवाह हुआ है। वे और उनकी नवविवाहिता पत्नी एक कस्बे में रहते हैं। किसी मामूली बात पर उनमें मतभेद हो गया। मतभेद बढ़ता गया और अन्त में श्रीमती 'क' बिना कुछ कहे घर छोड़कर चल दी। श्री 'क' दुःखी हो गए। अपनी मां को बुलाया। चार दिन में ही श्रीमती 'क' का पता चला कि वे अपनी बहन के यहां हैं। वहां से मां ने बुलाया, समझाया और परिवार शान्तिपूर्वक चला। श्रीमती 'क' कहती हैं कि यदि मां नहीं होती तो परिवार चल ही नहीं सकता था। नव दम्पत्ति के लिए तो परिवार के बुजुर्ग अमृत तुल्य हैं। एक अच्छे परिवार की कल्पना आप बिना बुजुर्ग के कर ही नहीं सकते। संस्कृत में कहा गया है **'वृद्ध वाक्यै बिना तूनं नैवोत्तारं कथचन'** अर्थात् वृद्ध लोगों के बिना किसी प्रकार का विस्तार नही।

श्रीमती 'ख' शासकीय सेवा में है। उनके पति भी अधिकारी हैं। जब दोनों काम पर जाते हैं, तो घर पर ताला होता है। बच्चा सड़क पर खेलने को मजबूर है। इतनी खराब स्थिति है कि आज मजबूरी में आंसू ही बहा सकते हैं। अब दादी मां के आ जाने से एक सुकून है। जनगणना, निर्वाचन जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों में शासकीय सेवकों को जो कष्ट उठाना पड़ता हैं उसका कारण परिवार में बुजुर्ग व्यक्ति का अभाव ही है। बुजुर्ग व्यक्ति को प्रेमपूर्वक परिवार में रखना नवदम्पति का ही स्वार्थ है। थोड़ी-सी स्वतन्त्रता के लिए आधुनिकता का चोगा पहन हम व्यक्तिगत स्वार्थ का बिगुल बजाते हैं। वह जीवन संघर्ष में अपने जी विरूद्ध हथियार उठाने जैसा है।

बुजुर्ग व्यक्ति के अनुभव की एक सुगंध है। उसकी दृष्टि में एक प्रकाश है। उसकी काया में शुद्ध प्रेम, अपनत्व, ममत्व, त्याग, सहयोग समाया हुआ है। वह तपा तपाया सोना है। उसका साथ लक्ष्मी का निवास है। यदि आप बुजुर्ग को साथ रखते हैं तो परिवार को क्या मिलता है। विचार कीजिए।

परिवार के संबंध में साहित्यकार जैनेन्द्र के इन विचारों पर ध्यान दीजिए, 'परिवार मर्यादाओं से बनता है, परस्पर कर्त्तव्य होते हैं। अनुशासन होता है और उस नियत परम्परा में कुछ जनों की इकाई एक हित के आसपास जुटकर व्यूह में चलती है। उस इकाई के प्रति हर सदस्य अपना आत्मदान करता है। इज्जत खानदान की होती है। हर एक उसमें लाभ लेता है और अपना त्याग देता है।

अनुशासन- जिस परिवार में बुजुर्ग रहता है, उसमें अनुशासन बना रहता है। चाहे जैसा वातावरण हो, स्वच्छन्दता का प्रवेश वहां नहीं हो सकता। बुजुर्ग घर में रहता है, इससे युवकों व बच्चों पर एक नियंत्रण रहता है। सब बुजुर्ग की भावनाओं का सम्मान करते हुए रहते हैं, इससे घर का अनुशासन बना रहता है। ऐसे परिवार से शराब, जुआ, रात्रि कालीन दावतें और मर्यादाहीन व्यवहार कोसों दूर रहता है।

बुजुर्ग व्यक्ति का वास सुख-शान्ति की गारंटी है। कितने ही विवाद तो बुजुर्ग व्यक्ति की उपस्थिति के कारण बिना उलझे सुलझ जाते हैं और जो विवाद अहंवश भी हैं वे भी बुजुर्ग व्यक्ति के शांत हस्तक्षेप से सुलझ जाते हैं और घर की बात घर में रहती है। अड़ोसी-पड़ोसी उसका मजा नहीं ले पाते। पति-पत्नी के सुलह के आधार है बुजुर्ग।

बुजुर्ग व्यक्ति बच्चों का सबसे अच्छा मित्र और सहयोगी होता है। बच्चों के साथ बच्चा बन कर खेलना, उन्हें कहानी सुनाना, उनके लिए खिलौने बनाना, उन्हें नई-नई बात सिखाना बुजुर्ग व्यक्ति का हार्दिक आनन्द होता है। आज के इस समय में जब किसी के पास मरने को समय नहीं है, बुजुर्ग व्यक्ति भविष्य की धरोहर के लिए अनुभवयुक्त अमूल्य समयदान करता है। आज भी बच्चों के सबसे अच्छे मित्र वृद्ध ही हैं। बच्चों को स्कूल छोड़ना और लेने जाना बुजुर्ग व्यक्ति के लिए सुख व आनन्द का कारण है।

कच्ची गृहस्थी में परिवार की बहू के पास इतने काम होते हैं कि वह अकेली इन कार्यो का निर्वाह कर ही नहीं सकती है। बहुत छोटे दिखने वाले कार्य भी समय चाहते हैं। हरा धनिया, मैथी, पालक साफ करना ऐसे ही कार्यो के उदाहरण हैं। वृद्ध व्यक्ति घर के लिए किफायती सामान लाने, उन्हें साफ करने और व्यवस्थित रखने में एक आनन्द अनुभव करता है। वह यह कार्य प्रसन्नतापूर्वक करता है।

बुजुर्ग व्यक्ति जिस घर परिवार में रहता है, वहां एक अदृश्य नियंत्रण रहता है। वह कुछ कहे, न कहे, यह नियंत्रण कार्य करता दिखाई देता है। खाना-पीना, रहन-सहन, व्यवहार, वार्तालाप हर संबंध में घर के बुजुर्ग का ध्यान रखना पड़ता है। इस नियंत्रण के कारण परिवार सुचारु चलता है और जिस परिवार में बुजुर्ग व्यक्ति का सम्मान नहीं होता, वहां एकता नहीं होती। जहां एकता नहीं होती वहां व्यर्थ के लड़ाई-झगड़े और अपव्यय आम बात होती है और उस घर में लक्ष्मी भी निवास नहीं करती। हिन्दी लोकोक्ति में कहा गया है, 'वयोवृद्ध का सम्मान करने से पापों का नाश होता है।'

हमारी संस्कृति और संस्कार तथा परम्परा का वह वाहक होता है। परिवार का वह इतिहास और भूगोल होता है। परिवार के संघर्षो का वह चश्मदीद गवाह है और इसलिए भविष्य के लिए वह फ्रैंड फिलासफर व गाइड है। जर्मन लेखक राडपाख इसलिए सच कहे हैं, 'वृद्धावस्था विचार करती है, यौवन साहस करता है।'

बुजुर्ग व्यक्ति के साथ रहने के अनेक लाभ हो सकते हैं। वहीं हमें उसका सम्मान करना, उसके नियंत्रण व अनुशासन को स्वीकार करना पड़ता है। ऐसा नहीं है कि बुजुर्ग केवल अन्ध विश्वासी और सनकी होते हैं। आज का वृद्ध प्रगतिशील और आधुनिक भी है। केवल समझ का अन्तर है। युवा जिसे आधुनिकता कहता है, उसे उनका अनुभव स्वीकार नहीं करता। अनुभव का कोई विकल्प नहीं है। अनुभव के आगे भावुकता और क्षणिक सुख का कोई महत्व नहीं है। इसलिए आप यदि एकल परिवार में रहते हैं तो जाइए बुजुर्गो को ससम्मान लाइए और उनके अनुभव का लाभ उठाइए। यही आपका और देश का सुख है।

ईश्वर है या नहीं?

अब शायद ही कोई व्यक्ति हो जिसे आपत्ति हो परमात्मा के इन गुणों पर। पर फिर भी हम एक-एक करके ऋषि द्वारा बताये इन सारे गुणों पर चर्चा करेंगे। यह सारे गुण उसके स्वरूप से जुड़े हुए हैं और आपस में भी संबंधित हैं। यह सारे गुण उस परमात्मा के पूर्ण होने की भी बात हमें बताते हैं। आइये हम उसके स्वरूप को पूर्ण करने वाले गुणों पर चर्चा प्रारंभ करें। यह सारे गुण उसके स्वरूप से जुड़े हुए हैं और आपस में भी संबंधित हैं। यह सारे गुण उस परमात्मा के पूर्ण होने की भी बात हमें बताते हैं। आइये हम उसके स्वरूप को पूर्ण करने वाले गुणों पर चर्चा प्रारंभ करें।

सच्चिदानन्दस्वरूप: यह शब्द सत्+चित्+आनन्द से बना है। सत् कहते हैं जो हमेशा रहे समय के बंधन में न बंधने वाला। चित् कहते हैं चिताने वाला यानी प्रकृति और जीवों का मिलन कराने वाला वही है यह ये भी बताता है कि वह सत्य जानता है, लोगों के किये हुए कर्मो को जानता है और न्याय रखते उपर्युक्त कर्माशय युक्त जीवात्मा को उपर्युक्त शरीर दिलाता है। वह आनन्द स्वरूप भी है यानी वह परमात्मा राग द्वेष ईर्ष्या भाव इत्यादि से मुक्त है। जो उसकी उपासना नहीं करता उससे भी वह आनन्द स्वरूप परमात्मा प्रेम करता है, उसकी अमृतवर्षा नहीं सबके लिए समान है। हमारा मन जितना शुद्ध होगा, जितना ही हम उस चेतना के आनन्द स्वरूप को पाने का प्रयास करेंगे उतना ही हम लाभ उठा सकेंगे। अब कोई मनुष्य शरीर में रहते, काल से परे नहीं हो सकता, अत: सत् गुण मनुष्य पर लागू नहीं होता, जीवात्मा जरूर अनादी है काल के अंत के बाद भी रहेगी पर वह कुछ कर नहीं सकती प्रकृति के बिना इसलिए परमात्मा जैसे सामर्थ्य उसमें नहीं। जीव विज्ञान (क्लोनिंग) या गर्भाधान संस्कार के माध्यम से रासायनिक प्रक्रियायें जरूर कर सकता है मनुष्य, पर उसके बाद उसे परमात्मा से उत्तम जीवात्मा के लिए प्रार्थना करनी ही पड़ेगी सो चित् गुण भी परमात्मा जैसा नहीं प्राप्त कर सकता। हां आनन्द स्वरूप तो मनुष्य समाधी अवस्था में हो सकता है और उसके बाद मोक्ष को प्राप्त होता है तो निश्चित समय के लिए उसी आनन्द में रहता है।

निराकार: जिसका कोई आकार न हो से निराकार कहते हैं। अब यह गुण समझने के लिए हम विपरीत बात मान कर समझते हैं। हम परमात्मा का आकार मान लेते हैं और देखते हैं ऐसा मानने से क्या दोष आते हैं। एक निश्चित आकार की चेतना का प्रभाव भी निश्चित सीमा में रहेगा। उसका ज्ञान भी सीमित रहेगा या जितना भी रहेगा वह सिर्फ अपनी सत्ता में लगा सकता है जहाँ तक वह है। उसकी न्याय सत्ता भी प्रभावित होगी, उसके निकट अधिक न्याय होगा और जैसे-जैसे दूरी बढ़ती जाएगी उसका न्याय कम होगा क्योंकि वह वहाँ पर है ही नहीं। सम्पूर्ण सृष्टि के निर्माण का सामर्थ्य भी उसमें नहीं होगा वह सिर्फ सीमित आकार के साथ सीमित निर्माण ही कर सकेगा। यानी सारे गुण विपरीत सिद्ध होते हैं यदि हम परमात्मा को निराकार नहीं मानते। वह अन्यायकारी, सीमित सामर्थ्य वाला सीमित ज्ञान वाला इत्यादि सिद्ध होता है। इसलिए परमात्मा निराकार ही है तभी वह पूर्ण है। अब निराकार कैसा होता है यह समझना जरूरी है। वह ब्रह्म है अर्थात् सबसे बड़ा है सूर्य चंद्र ही नहीं सारा या सारे ब्रह्माण्ड उसमें आते हैं। हम सब उस असीम चेतना के भीतर हैं और वह हमारे भीतर है यानी जिसे हम शून्य कहते हैं वह भी परमात्मा की चेतना से भरा हुआ है यही उसका निराकार स्वरूप है।

सर्वशक्तिमान: यानी सबसे ताकतवर, उसकी शक्ति के समान किसी का सामर्थ्य नहीं। कोई मनुष्यधारी उसकी सर्वशक्तिमत्ता के पास नहीं पहुँच सकता। जो वह सबसे अधिक शक्ति सामर्थ्यवाला न हो तो वह सूर्य आदि ग्रहों का, चंद्र आदि पिंडो का निर्माण भी न कर सके। वह ग्रहों से लेकर समस्त परमाणुओं तक को अपनी शक्ति से संतुलित रखता है। कोई मनुष्य ऐसा नहीं कर सकता।

न्यायकारी: जो जिस योग्य है उसे वह कल्याण हेतु प्रदान करने वाला, न्याय करने वाला परमात्मा ही है। सभी मनुष्यों को चाहिये के परमात्मा के न्याय के गुण को धारण करे और समस्त जगत् में न्याय के साथ, न्याय के लिए ही जीवन व्यतीत करे। न अन्याय करे न होने दे यही धर्म को धारण कराता है। आप को संशय ये हो सकता है के दुनिया में जो गलत कार्य होते हैं क्या वह परमात्मा की इच्छा से होते हैं? नहीं कदापि नहीं, वह सदैव लोगों को अपने गुणों का आनन्द देता रहता है हमारा अन्त:करण मलिन होने से हम उसके आदेशों का पालन नहीं कर पाते। और जीव कर्म करने को पूर्णत: स्वतन्त्र है पर कर्मफल पाने को परतन्त्र है। जो अन्याय होता दीखता है उसका कारण पशुतुल्य मनुष्य है और न्यायव्यवस्था में उन्हें दंड देने वाला परमात्मा है।

दयालु: देखिये न्यायकारी के बाद दयालु कहा गया है। वह अभयदान कर्ता है, दोषी को दंड देने वाला और न्याय करने वाले पर दया करने वाला है। उसका यह गुण सभी मनुष्यों को अपने अंदर लेना चाहिए।

अजन्मा: प्रकृति से युक्त होने को जन्म कहते हैं। जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु भी निश्चित है और जो मृत्यु को प्राप्त हो जाए वह परमात्मा नहीं हो सकता। वह परमात्मा तो सदैव से प्रकृति का त्याग करे हुए है और क्योंकि वह त्याग करे हुए है इसीलिए उसने जीवात्माओं के जन्ममरण व्यवस्था हेतु सृष्टि का निर्माण किया। अत: वह परमात्मा अजन्मा है।

अनंत: जो अजन्मा है उसका कोई अंत भी नहीं इसलिए वह अनंत है। उसका कोई परिमाण करना संभव नहीं इसलिए भी वह अनंत है यानी हर दिशा में बस फैला हुआ है बिना किसी अंत के।

निर्विकार: उसमें कोई विकार नहीं। जो भी मनुष्य शरीर धारण करता हैं वह विकारों से नहीं बच सकता। रोग से शोक तक भिन्न विकार उसमें रहते ही हैं। जब योगी समाधी में जाता है तब जीवात्मा उस निर्विकार परमात्मा के आनन्द का अनुभव करती है। जो वह निर्विकार न हो तो आनन्द में न रह सके। आनन्द सुख और दु:ख से भिन्न है। आनन्द युक्त प्रेम मनुष्य के काम (इच्छा) युक्त प्रेम से भिन्न होता है।

अनादि: वह सदैव से था सदैव रहेगा इसलिए वह परमात्मा अनादी है। परमात्मा के अतिरिक्त जीवात्मा और प्रकृति भी अनादी हैं। पर जब जीवात्मा शरीर धारण करती है तो उसके शरीर की मृत्यु निश्चित होती है और प्रकृति का जब परमात्मा स्वरूप बदलता है, तो प्रकृति का वापस अपने मूल स्वरूप में आना भी निश्चित है।

अनुपम: उसके सामान कोई नहीं हो सकता। यह गुण बताता है की वह एक ही है और उसके जैसा दूसरा कोई नहीं।

सर्वाधार: सबको धारण करने वाला सर्वाधार परमात्मा है। उसका

धारण किया हुआ शरीर यही है कि प्रकृति और जगत सब उसके अंदर हैं और वह ब्रह्म स्वरूप सबसे बड़ा है। यह उसके निराकार गुण की भी पुष्टि करता है जो वह निराकार न होता तो सर्वाधार न होता।

सर्वेश्वर: अर्थात् सबका ईश्वर परमात्मा है यानी के ईश्वर एक है। जो वह सर्वेश्वर न हो तो पूरे जगत् में अव्यवस्था फैल जाए। सृष्टि कभी क्रम में आ ही न पाए क्योंकि दो सृष्टिकर्ता मानें तो जगत में भिन्न-भिन्न नियमों को पावेंगे पर विज्ञान अर्थात् प्रकृति से निर्मित सरचनाओं के नियम समस्त ब्रह्माण्ड में एक ही है इसलिए सबका ईश्वर एक परमात्मा है।

सब जगह पर: इसका पर्याय संस्कृत में विष्णु होता है। जो वह हर जगह न हो तो हर जगह निर्माण या प्रलय भी न सके। वह सातवें आसमान पर नहीं अपितु सारे आसमान उसके अंदर समाहित हैं। उसका सब जगह पर होने का गुण भी उसे सर्वज्ञानी होना सार्थक करता है।

सर्वातर्यामी: यानी सब कुछ जानने वालां सर्वज्ञानी सिर्फ परमात्मा है। वह इतना सूक्ष्म है कि अंदर भी है और बाहर भी, तो आप कुछ सोचते हैं उसे तुरंत ही ज्ञात हो जाता है उसकी उपस्थिति के कारण।

अत: हमें सदैव सर्वकल्याणकारी चिंतन (यानी यज्ञ का) चिंतन करना चाहिए और जो वह सर्वान्तर्यामी न होता तो सृष्टि का निर्माण भी न कर पाता। इसीलिए वह सबका गुरु कहा गया है उसे सभी पदार्थो की विद्या आती है इसीलिए आर्यो के प्रथम नियम में सत्य विद्या का मूल परमेश्वर बताया गया है। जो चेतना होती है वह सदैव ज्ञान से युक्त होती है और वो चेतना जो हर जगह है वह सर्वज्ञानी ही है।

अजर: वह आयु को प्राप्त नहीं होता। उसे बुढ़ापा नहीं आता वह सदा एक सा रहता है यह उसके सब जगह पर गुण की पुष्टि करता है। उसको काल से भिन्न करता है उसका अजरता का गुण और परमात्मा अपना गुण कभी नहीं छोड़ता।

अमर: जो वह अमर है सो वह अमर है। कभी मर नहीं सकता, सदा से है सदा रहेगा।

अभय: जो वह अजर है और अमर है तो वह अभय भी है क्योंकि उसके पास भय का कोई कारण नहीं और जो वह अभय न होता तो निर्विकार भी न होता।

नित्य: वह निश्छल अविनाशी है इसलिए नित्य कहा गया है। कोई उसका विनाश नहीं कर सकता, विनाश और निर्माण का कारण वह परमात्मा है।

पवित्र: उससे अधिक पवित्र कोई नहीं। उसका स्वभाव साधू है, वह दयालु है, वह न्यायकारी है पवित्रता को पूर्ण करने के सारे गुण उसमें हैं और इस प्रकार जैसे वह परमात्मा है वैसा कोई पवित्र नहीं।

सृष्टिकर्ता: उपरोक्त गुण उसे सृष्टिकर्ता सिद्ध करते हैं जो उसमें इतना सामर्थ्य है और जो वह पवित्र है तो वह आलसियों की तरह अपने सामर्थ्य का प्रयोग न करने का अधर्म नहीं कर सकता और इसीलिए उसने अपने सामर्थ्य और जीवात्मा के सामथ्य को प्रकृति की उपस्थिति की उपयोगिता को सार्थक करते हुए सृष्टि का निर्माण किया।

समस्त वेदादि शास्त्र इन्हीं गुणों से युक्त परमात्मा की बात करते हैं। ये जो परमात्मा जो तर्क से भी सिद्ध है और वेद के प्रमाण से भी सिद्ध है उसी की उपासना से मनुष्य का कल्याण है। यों तो उसके असंख्य गुण हमें वेद बताते हैं पर इतने ही गुण में हम उसके स्वरूप को समझ सकेंगे। आप को यदि अभी भी कोई संशय रह गया हो तो आप परमात्मा के यह गुण उसमें लगा के देखिये जिसे आप साक्षात परमात्मा मान रहे हैं। यदि वह इन गुणों को पूर्ण करे तो वह परमात्मा है परन्तु कोई मनुष्य इन सभी गुणों को पूर्ण नहीं कर सकता। जो शरीर धारी है वह जीवात्मा है और जीवामा ही माता के गर्भ में नौ मास उल्टा लटकती है ताकि उस परमात्मा के योग के माध्यम से साक्षात्कार कर सके और मोक्ष को प्राप्त कर सके। जितने भी आप्त हुए हैं उन सभी ने उसकी उपासना उसके श्रेष्ठ नाम ''ओ३म्'' से की है। सभी महर्षि अग्नि, वायु, अंगिरा आदित्य, ब्रह्मा, कणाद, मनु, जैमिनी, दयानन्द इत्यादि एवं सभी धर्म संस्थापक राजाओं ने राम, कृष्ण, शंकर इत्यादि एवं सभी आचार्यो ने आचार्य चाणक्य, आचार्य शंकर इत्यादि ने ''ओ३म्'' नाम की एक मात्र निराकार ईश्वर की उपासना की है।

शोक समाचार

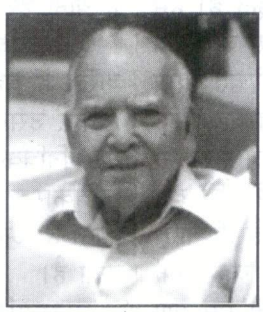

श्रीमती कृष्णा चड्ढा जी आर्य समाज टैगोर गार्डन की संरक्षिका एवम् पूर्व प्रधाना, मन्त्रिणी, प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली, पूर्व मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के पतिदेव श्री योगराज चड्ढा जी का निधन 91 वर्ष की आयु में 18.04.2017 को उनके निवास स्थान में हो गया।

श्री योगराज चड्ढा जी का जन्म 25 सितम्बर 1926 को गुजरात पाकिस्तान में हुआ था आपने ग्रेजुएशन के बाद पंजाब नेशनल बैंक में मैनेजर के पद पर कार्य किया और वहां से 1986 को रिटायर हुए। चड्ढा जी अपने पीछे 2 पुत्र और 2 पुत्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं। बड़े पुत्र श्री सुशील चड्ढा जी, पी.एन.बी. हाऊसिंग फाइनेन्स लिमिटेड में वाइस प्रेसीडेन्ट के पद से रिटायर्ड हैं। छोटे पुत्र सुधीर चड्ढा जी बिल्डर का कार्य करते हैं। चड्ढा जी का पूरा परिवार आर्य समाज के सभी कार्यो में बढ़-चढ़कर भाग लेता हैं तथा पूरा परिवार वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत है।

चड्ढा जी के अन्तिम संस्कार में आर्य जगत के अनेक सम्माननीय कार्यकर्त्ताओं तथा नेताओं ने उपस्थित होकर संस्कार कराया संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से संस्कार विधि के अनुसार आर्य समाज के विद्वान आचार्य वीरेन्द्र कुमार शास्त्री ने सम्पन्न कराया।

श्रद्धांजलि सभा आर्य समाज टैगौर गार्डन में की गई, जिसमें श्री विनय आर्य, श्री धर्म पाल आर्य, श्री सतीश चड्ढा, श्री अजय सहगल, श्री अनिल आर्य, श्री सुभाष आर्य पूर्व महापौर दिल्ली, डॉ. महेश विद्यालंकार, स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी और अन्य अनेक आर्य समाज के प्रधान व मन्त्रीगण उपस्थित थे।

टंकारा ट्रस्ट परिवार की ओर से दिवंगत के प्रति भावभीनि श्रद्धांजलि।

आत्मविश्वास

❒ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

आत्मविश्वास मनुष्य जीवन में सफलता का प्रथम सोपान है। किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए सबसे पहले हमें आत्मविश्वास होना चाहिए कि हम इस कार्य को पूरा करने के लिए सक्षम हैं। इसलिए अपने स्वयं पर विश्वास जागृत करने के लिए हमें अपनी शक्तियों एवम् सीमाओं को जानने की आवश्यकता है। यदि हम अपनी शक्तियों को भली भांति जान जायेंगे तो निश्चिय रूप से हमारे अंदर आत्मबल और आत्मविश्वास का संचार होगा जो हमारे जीवन में सफलता का आधार बनेगा। अपनी शक्तियों को पहचानने के लिए हमें अपनी आत्मा को जानना होगा। हमारी आत्मा अजर अमर अविनाशी सदा रहने वाली है इस शरीर के जन्म से पूर्व और मृत्यु के उपरांत भी मेरी इस आत्मा का अस्तित्व रहेगा। यह आत्मबोध निश्चित रूप से हमारे अंदर अतुल्य आत्मबल का संचार कर देता है। वैसे भी ऋग्वेद में द्युमां असि क्रवुमा इन्द्र: धीर:। 1.62.12 कहकर वेद ने अपनी शक्तियों को पहचानने का आदेश दिया है। ऐश्वर्यशाली आत्मा प्रकाशमान, क्रियावान और धीर है। जीवात्मा अपनी शक्तियों को पहचान मन, बुद्धि और इन्द्रियों की शक्ति से परिपूर्ण आत्मज्योति से चमकने वाला कर्मशील और धैर्यवान है। यदि हम अपनी इन शक्तियों को पहचान लें तो निश्चित रूप से हमारा आत्मश्विास बढ़ जायेगा।

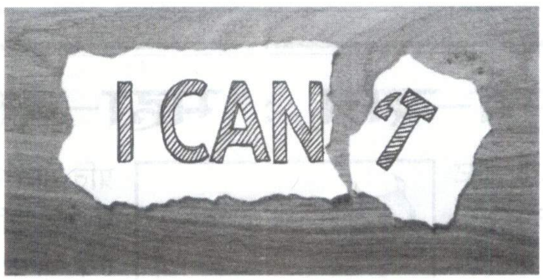

वैसे भी ऋग्वेद में ही अहमिन्द्रो न पराजिग्ये। 10.48.5 कहकर वेद भगवान ने आत्मविश्वास जागृत करने का आदेश देते हुए कहा मनुष्य इन्द्र है, तू कभी हार नहीं सकता। आत्मविश्वास जागृत होने पर कोई भी कार्य असम्भव नहीं रहता। जब मनुष्य के हृदय में विश्वास हो जाता है कि "मैं इस कार्य को पूर्ण कर लूंगा" तब वह कभी परास्त नहीं हो सकता। आत्मविश्वासी कठिनाईयों से भागता नहीं अपितु धीरता पूर्वक उनका सामना करता है। पाश्चात्य विद्वान जार्ज बर्नाड शा ने तो यह कहा है कि कठिनाई और विरोध वह मिट्टी है जिसमें शौर्य और आत्मविश्वास का विकास होता है। इससे यदि दूसरे शब्दों में समझने का प्रयास करे तो आसानी से कह सकते हैं कि अपने काम में अटूट श्रद्धा से आत्मविश्वास का विकास होता है। हम जीवन में चाहे किसी पर कितना भी शक करें लेकिन कभी स्वयं अपने या अपनी शक्तियों पर शक ना करें। यदि हम गहराई से चिंतन करें तो पायेंगे कि आत्मविश्वास का अभाव ही अंधविश्वासों को जन्म देता है जो हमारे पतन का कारण बनता है। इसलिए वेद भगवान के आदेश अपश्यं गोपाम्। ऋग्वेद 2.177.32 का पालन करते हुए अपनी आत्मा का दर्शन करें अर्थात् अपनी आत्मशक्ति को पहचान कर आत्मबल जागृत करके आत्मविश्वासी बनें। अपनी आत्मा का दर्शन करें अर्थात अपनी आत्मशक्ति को पहचान कर आत्मबल जागृत करके आत्मविश्वासी बनें।

हम कभी भी यह ना सोचें कि मैं दीन हीन बेकार कमजोर हूं। हमें तो यह अनमोल तन परमपिता परमेश्वर ने अपनी न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत हमारे पूर्व जन्मों के सद्कर्मो के फलस्वरूप प्रदान किया है। अपने शरीर के एक-एक अंग की अतुलनीय संरचना को पहचानें। ईश्वर प्रदत्त अनमोल तन को अपने आधीन रखकर अपने आत्मबल से ऐश्वर्य को प्राप्त करें। वेद भगवान ने भी कहा अदीना: स्याम शरद: शतम्। यजुर्वेद 36/4 हम सौ बरस तक दीनता रहित होकर जीवन व्यतीत करें। इसके लिए हमें अपने मन से दीन भावनाओं को छोड़कर अपने जीवन में आत्मविश्वास की दिव्य और उच्च भावना को जागृत करना होगा। इससे हम जीवन के प्रत्येक कार्य में सफल हो सकते हैं। दरअसल आज हमारी स्थिति उस सिंह शावक सरीखी है जो भेड़ों के झुंड में रहकर अपनी पहचान शक्तियों को भूल चुका है। आवश्यकता है खुद को पहचान कर आत्मदर्शन द्वारा आत्मबल जागृत करते हुए आत्मविश्वास होकर धैर्य एवं शौर्य से कर्म करके ऐश्वर्य पाने की।

- 602 जी.एच. 53, सैक्टर-20, पंचकूला, मो. 09467608686

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या
उप-प्रधाना

रामनाथ सहगल
(मन्त्री)

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 7000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गौ-दान : महा-दान

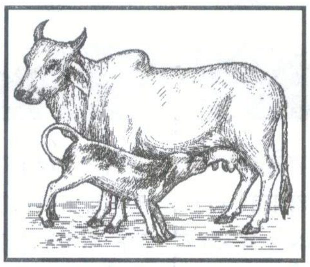

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20,000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

टंकारा समाचार

पाठकों से विनम्र निवेदन

आपका प्रिय टंकारा समाचार निरन्तर 20 वर्षो से प्रति माह प्रकाशित हो रहा है। हमारा यह प्रयास रहा है कि वेद प्रचार, वैदिक मान्यताओं, महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन आप तक सरलतम भाषा में पहुँचे। आप द्वारा दिये गये सहयोग से इसकी ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। आप इसके मान्य आजीवन सदस्य है।

आप सभी आजीवन सदस्यों से अनुरोध है कि 200/- रूपये की राशि टंकारा समाचार के नाम चैक द्वारा या टंकारा समाचार के **खाता नम्बर 0130010101110898, बैंक पी.एन.बी. मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, IFSC Code-PUNB0466500** में सीधे जमा करके अथवा NEFT करवा कर टंकारा समाचार कार्यालय, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर सूचित करें अथवा मोबाइल नम्बर 09560688950 पर एस.एम.एस. या कॉल कर (अपना आजीवन सदस्यता नम्बर नाम पते सहित भेजें।) ताकि टंकारा समाचार आपको प्राप्त होता रहे। **(क्योंकि आजीवन सदस्य की राशि बढ़ा दी गई है।)**

-प्रबन्धक

समाचार दर्पण

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपदेशक महाविद्यालय (टंकारा)
प्रवेश प्रारम्भ

अपने बच्चों को विद्वान्, चरित्रवान तथा संस्कारी बनाने के लिए ऋषि दयानन्द जी की जन्मभूमि टंकारा के गुरुकुल में प्रवेश करवायें। योग्यता-शरीर तथा मन से स्वस्थ होना चाहिए।

शैक्षणिक योग्यता- कक्षा 7, 8 अथवा 10वीं पास। केवल लड़कों के लिए गुरुकुल है। प्रवेश की संख्या सीमित है। अपना आवेदन 15 जून 2017 से पहले भेजने का कष्ट करें। गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरियाणा से सम्बन्धित है। विशेष जानकारी के लिए पत्र लिखें अथवा गुरुकुल के आचार्य जी से फोन पर सम्पर्क करें और आने से पूर्व आचार्य जी से आज्ञा लेवें। (केवल आमन्त्रित ब्रह्मचारी ही आवें।)

अध्यापकों की आवश्यकता

प्राच्य व्याकरण पद्धति से, गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) के पाठ्यक्रमानुसार पढ़ाने की क्षमता रखता हो ऐसे अध्यापक की आवश्यकता है। आचार्य, शास्त्री आदि की डिग्री हो या न हो तो भी आवेदन कर सकते हैं। वेतनमान योग्यतानुसारा। आवास-भोजनादि की व्यवस्था गुरुकुल में निःशुल्क होगी। गुरुकुल के आचार्य जी को अपनी योग्यतादि के विवरण समेत आवेदन भेजे।

आचार्य रामदेव जी

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,

डाकखाना-टंकारा, जिला-मोरबी (गुजरात), पिन-363650, मो. 09913251448

प्रवेश प्रारम्भ
आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया राजस्थान राज्य के अलवर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर है। यह गुरुकुल वर्तमान में कन्याओं की शिक्षा का सर्वोत्तम केन्द्र है। अतः समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि गुरुकुल में बालिकाओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

सम्पर्क करें :

आचार्य प्रेमलता, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401,

फोन: 01495-270503, मो. 09416747308

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर, चौक आर्य समाज, पटियाला द्वारा दिनांक 4 अप्रैल से 9 अप्रैल 2017 बड़ी धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ वार्षिक उत्सव एवम् यजुर्वेद पारायण महायज्ञ मनाया गया। इस शुभ अवसर पर कुरुक्षेत्र निवासी आर्य जगत् के उच्च कोटी के विद्वान एवम् वैदिक प्रवक्ता स्वामी विदेह योगी जी मुख्य प्रवक्ता के रूप में और चण्डीगढ़ से भजनोपदेशक पं. उपेन्द्र आर्य जी और ढोलक वादक पं. कृष्ण आर्य जी विशेष रूप से आमंत्रित थे। इस पूरे समारोह में पटियाला और आस पास के कस्बों के आर्य भाई बहनों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। प्रधान श्री राजकुमार सिंगला जी के मार्गदर्शन में आर्य समाज के पदाधिकारियों ने लगभग 15-20 दिन पहले ही समारोह की तैयारियां शुरु कर दी थी। समारोह की सूचना के लिए सारे नगर में इश्तिहार बांटे गए, जगह-जगह पर बैनर लगवाए गए और मुनादी करवाई गई।

4 अप्रैल 2017 दिन मंगलवार को प्रातः 7.00 बजे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ प्रारम्भ हुआ, जिसकी पूर्णाहुति दिनांक 9 अप्रैल रविवार को सम्पन्न हुई। यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी विदेह योगी जी थे। आर्य समाज के बहुत ही विद्वान पुरोहित पं. गजेन्द्र शास्त्री जी एवम प्रिंसीपल निखिल रंजन जी स्वामी जी के सहयोगी थे। प्रातः 7.00 बजे से 9.30 बजे तक यज्ञ और 9.30 बजे से 11.00 बजे तक पं. उपेन्द्र आर्य जी के भजन और स्वामी जी के प्रवचन होते रहे।

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल एवम् श्रीमती पुष्पा मुंजाल जी की स्मृति में 'अग्निहोत्र एक अध्ययन' पुस्तक का विमोचन

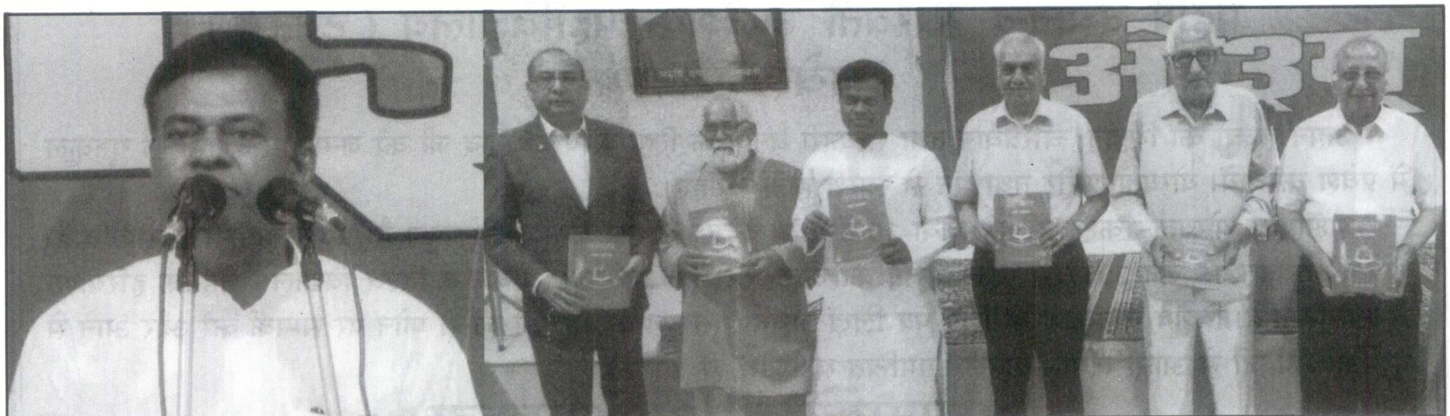

'अग्निहोत्र एक अध्ययन' पुस्तक के विषय में बताते हुए लेखक डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री। पुस्तक का विमोचन करते सर्वश्री अजय चौहान, स्वामी प्रणवानन्द, लेखक स्वयं, योगेश मुंजाल, रामनाथ सहगल एवम् सुधीर मुंजाल।

स्वर्गीय सत्यानन्द जी मुंजाल एवम् श्रीमती पुष्पा मुंजाल की स्मृति में 'अग्निहोत्र एक अध्ययन' पुस्तक का विमोचन शुक्रवार दिनांक 05 मई 2017 को आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली के प्रागंण में आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता महात्मा सत्यानन्द मुंजाल के सुपुत्र श्री योगेश मुंजाल जी ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री रामनाथ सहगल, उपप्रधान डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् उपप्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्त्री टंकारा ट्रस्ट, श्री अजय चौहान, प्रधान आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी एवम् डायरेक्टर एमेटी शिक्षण संस्थान, ए.के.सी. ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज, आचार्य स्वामी प्रणवानन्द जी, गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली एवम् श्री सुधीर मुंजाल चेयरमैन हीरो साईकल गुजरात उपस्थित थे। इस अवसर पर दिल्ली आर्य समाजों के असंख्य प्रधान एवम् मन्त्री दिल्ली स्थित वैदिक विद्वान एवम् प्रचारक भी उपस्थित हुए। 500 व्यक्तियों की क्षमता वाला सभागार पूर्ण रूप से भरा हुआ था। आयोजकों के विशेष आमन्त्रण पर स्थानीय समाचार पत्रों के संवाददाता भी उपस्थित हुए।

पुस्तक के लेखक डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, खालसा कॉलेज (सांध्य) दिल्ली विश्वविद्यालय एवम् पूर्व अध्यक्ष दिल्ली संस्कृत एकादमी, दिल्ली राज्य, विमोचन से पूर्व डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जी द्वारा दिए गए वक्तव्य जो कि पुस्तक पर ही आधारित था एक विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। इससे पूर्व डॉ. धर्मेन्द्र की कई पुस्तके यज्ञ, उपनिषद् आदि पर प्रकाशित हो चुकी है जिनका की अंग्रेजी में भी प्रकाशन हुआ है। डॉ. धर्मेन्द्र आर्य समाज के क्षेत्र में एक युवा वैदिक विद्वान के रूप में जाने जाते हैं। वेद प्रचार हेतु आपने कई विदेश यात्राएं भी की है।

इस अवसर पर डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री जी के गुरु स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज ने डॉ. धर्मेन्द्र को अपना आशीर्वाद देते हुए ऐसी और कई पुस्तको के लेखन हेतु प्रोत्साहित किया।

अन्त में अध्यक्षीय भाषण में श्री योगेश मुंजाल जी ने कहा पुस्तकें प्रकाशित करने वाले तो बहुत हैं लेकिन पढ़ने वाले बहुत कम। इसलिए हमें अधिक से अधिक पुस्तकें स्वाध्याय करनी चाहिए। ऐसी प्रेरणा दी।

डी.ए.वी. विद्यालय कैलाश हिल्स दिल्ली में यज्ञशाला का उद्घाटन

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि डी.ए.वी. कैलाश हिल्स विद्यालय दिल्ली के नव सत्र पर नव निर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन समारोह के उपलक्ष्य में विद्यालय में हवन किया गया। यज्ञशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि आदरणीय श्री अजय सहगल जी, सम्पादक टंकारा समाचार के करकमलों के द्वारा करवाया गया। हवन में सभी विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रधानाचार्या श्रीमती इरा खन्ना ने सभी बच्चों का स्वागत किया एवम् सभी को आशीर्वाद दिया। सब तरफ यज्ञमय वातावरण था जो विद्यार्थियों को सीधे रूप से डी.ए.वी. की वैदिक परम्परा एवं नैतिक मूलयों से जोड़ता है। यज्ञ प्रार्थना के पश्चात् प्रसाद का वितरण किया गया।

''हिन्द की चादर, गुरु तेग बहादुर'' पुस्तक का लोकार्पण समारोह

दिनांक 6 मई 2017, शनिवार, नई दिल्ली, कान्स्टीट्यूशन क्लब स्पीकर हॉल के सुसज्जित में सायं 4 बजे ''हिन्द की चादर, गुरु तेग बहादुर'' विजय गुप्त द्वारा लिखित खण्ड काव्य भव्य लोकार्पण समारोह 2017 राष्ट्रीय सिख संगत एवम् दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) संरक्षक तथा स. चिरंजीव सिंह जी की अध्यक्षता में इस कार्यक्रम को आयोजित किया गया। डॉ. कृष्ण गोपाल (सह-सरकार्यवाह, रा.स्वयं सेवक संघ) ने मुख्य अतिथि के रूप में इस विषय की ऐतिहासिक प्रष्ठभूमि को व्यापक स्तर पर रेखांकित किया और गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान को विश्व के महापुरुषों की श्रेष्ठ श्रेणी के स्मरण करते हुए उनके इतिहास को वर्तमान के संदर्भो के साथ में जोड़कर राष्ट्रीय एकता के भाव को प्रमुखता से उभारा। समरोह के स्वागाध्यक्ष श्री राम कृष्ण तनेजा जी थे। डॉ. प्रचार्या सुरजीत कौर जॉली ने अपनी अत्यन्त सुलझी हुई समीक्षा में इस विषय को अपने लेख के महत्वूपर्ण संदर्भो में इस प्रस्तुक के प्रसंगों को अति रोचक बनाकर लेखक के प्रति पूरे समाज का आभार व्यक्त करके, इस कृति को अत्यन्त सफल और सार्थक बना दिया। स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उत्कृष्ट उद्बोदन में कहा कि यह पुस्तक हमें एक मंच पर लाने में सफल हुई जिसके व्यापक स्वरूप के भीतर मानवतावाद और अपने इतिहास के प्रष्ठो पर श्रेष्ठ प्रेरणा को प्राप्त कर सकते हैं, गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान तथा उनके पिता श्री हरगोबिन्द जी 52 राजाओं को जो ग्वालियर के किले में बंद थे, उन्हें भी जहांगीर से अपनी मुक्ति के समय आजाद करवाया था। स. देवेन्द्र सिंह साहनी तथा देवेन्द्र सिंह गुजराल जी ने भी पुस्तक तथा लेखक की महत्ता के विषय में अपने उदगार व्यक्त किए, अपने संक्षिप्त भाषण में विजय गुप्त जी ने कहा कि विश्व के इतिहास में कहीं नहीं मिलता कि कोई 9 वर्ष का पुत्र (गोविन्द सिंह) अपने पिता को धर्महित अपना बलिदान देने के प्रेरणा और कोई दादी माँ गुजारी की तरह अपने पोतों को सरहिन्द में धर्महित में बलिदान होने की प्रेरणा दे। आयोजन का सम्पूर्ण कार्यक्रम अति भव्य था। ऋचा नागपाल के सुन्दर शब्द, गायन और श्री रविदेव गुप्त जी के सफल मंच संचालन ने कार्यक्रम को बहुत ही रोचक बना दिया। यह पुस्तक सम्या प्रकाशक द्वारा प्रकाशित हुई है, इस कार्यक्रम के मुख्य संयोजक अविनाश जायसवाल जी ने कार्यक्रम के प्रारम्भ में ही इसकी रूपरेखा के मुख्य बिन्दुओं को स्पष्ट किया और आगे बढ़ाया।

स्वास्थ्य से सम्बन्धित कहावतें

स्त्री हो या पुरुष सभी स्वस्थ रहना चाहते हैं। स्वस्थ रहने के लिए आहार-विहार, आचार-विचार का ठीक रखना बहुत आवश्यक है। इन चारों को ठीक रखने के लिए कहावतें भी प्रचलित हैं। इन कहावतों को यदि हम आचरण में उतार लें तो हमें नीरोग और स्वस्थ रहने में बहुत कुछ सहायता मिल सकती है।

1. प्रातः काल खटिया से उठके, पिये तुरन्त पानी।
कबहूं घर में वेद न अइहे, बात घाघ के जानी।

प्रातः काल सो कर उठते ही तुरन्त पानी पीना चाहिए। ऐसा करने से शौच जाने में सरलता हो जाती है। कब्ज दूर हो जाती है। पेट शुद्ध और साफ रहता है। गैस की बीमारी से भी छुटकारा मिल जाता हैं इसीलिए घाघ कवि कहते हैं कि जो व्यक्ति प्रातः उठते ही पानी पीते हैं। उसे वैद्य को बुलाने की अथवा वैद्य के पास जाने की आवश्यकता नहीं रहती।

2. खावै, मूते, सोवै बाम, काये को वेद बसावै गांव।

खावै (भोजन करना) मूते (पेशाब करना) सोवै बाम (बाई करवट सोना) जिस गांव के व्यक्ति भोजन करने के तुरन्त बाद मूत त्यागते हैं, अर्थात् पेशाब करते हैं और बाई करवट सोते हैं। उनको न तो वैद्य के पास जाने की जरूरत है, न उसे बुलाने की जरूरत है और न ही वैद्य को गाँव में बसाने की जरूरत है।

3. प्रातः उठते पानी पीवे, दोपहर में मट्ठा पीवे।
सोते समय दूध पीवे, वैद्य के निकट नहीं जावे॥

जो व्यक्ति प्रातः उठते ही पानी पीता है। दोपहर में भोजन के साथ मट्ठा (छाछ, दही आदि) का प्रयोग करता है। रात्रि को सोते समय ग्लास-भर दूध पीता है तो उसका स्वास्थ्य ठीक रहता है। उसे वैद्य, हकीम अथवा डाक्टर की आवश्यकता नहीं रहती।

4. भोजन करके पड़े उतान, आठ श्वास छोड़े परमान।
सोलह दाहिनें, बतिस बाएं, तब कल परे अन्न के खाये॥

भोजन करने के बाद पीठ के बल चित लेट कर आठ बार स्वाभाविक श्वास-प्रश्वास ले। फिर दाहिनी करवट लेट कर सोलह बार स्वाभाविक श्वास-प्रश्वास ले। इसके बाद बाई करवट लेट कर बत्तीस बार स्वाभाविक श्वास-प्रश्वास ले। इस प्रकार प्रतिदिन करते रहने से खाया हुआ अन्न भली प्रकार पच जाता है। जो व्यक्ति ऐसा करते हैं, उन्हें वैद्य, हकीम अथवा डॉक्टर की आवश्यकता नहीं रहती है।

5. जो नर बायीं करवट सोवै।
उसका काल बैठकर रोवै॥

जो व्यक्ति बायीं करवट सोता है। वह बीमार नहीं होता और लम्बे समय तक जीवित रहता है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

वाले मानव ने बुद्धि का उपयोग भी किया तो अस्त्र-शस्त्र बनाने में-किसलिये कि मैं विजय प्राप्त करूं, किस पर? आन्तरिक पाशविक वृत्तियों पर? नहीं, अपने ही भाईयों पर, वह भी निहत्थों पर-कब-कब न जाने कितने-कितने नरसंहार हुए। आज भी पूर्वी बंगाल में पाकिस्तान के राक्षस याह्या ने लाखों लोग कत्ल करवा डाले, करोड़ों भारत आ गये, दुष्ट अमेरिका अपने को बुद्धिमान समझने वाला दनादन अस्त्र-शस्त्र दे रहा है। भारत के अन्दर भी यह राक्षसी वृत्ति पनप रही है। राजस्थान के एक गांव में एक बारह वर्ष के मजदूर की बलि दे दी गई कि हमारी योजना पूरी होगी तो रूपया मिलेगा। एक गांव में तो एक स्त्री ने अपने पड़ोस के दुधमुंहे बच्चे को कत्ल कर डाला और स्नान किया उसके खून से वो भी इसलिए कि अपनी कोख से बच्चे का मुख देखना चाहती थी।

एक मन्दबुद्धि नरपिशाच धूर्त निकम्मे ने तो एक गरीब किसान को बहका दिया कि गांव के खलिहान में आग लगा दे तो तुम्हें धन मिलेगा। उसने आग लगा दी। गरीब भूखे देश का लाखों मन अन्न जलकर राख हो गया। उसे धन तो न मिला हां जेल की चारदीवारी जरूर मिली।

हे ईश! सबको सुबुद्धि प्रदान करो जिससे हम समझ जायें अपने सही स्वरूप को, कर्तव्य को और उसके अनुसार ही हमारा हो जाये शुद्ध आचरण। सन् 1966 में भारत में एक तीव्र आन्दोलन चला। इतना बड़ा आन्दोलन भारतवर्ष में कभी नहीं हुआ और आगे भी होने की संभावना कम है।

आन्दोलन था गोरक्षा के लिए। इसी अवसर का लाभ उठाकर कुछ अवसरवादी लोगों ने चुनाव अभियान चला दिया तो कुछ हलवाइयों ने भैंस के दूध में पानी की मात्रा और ज्यादा बढ़ा दी और दुकानों पर बोर्ड लगा दिया कि यहां गाय का दूध मिलता है। गाय रोज तीस हजार सरकार कटवाती है, इनके घर में पता नहीं कौन सा गौ सदन है। यह है भारतीयों का व्यवहार। लोगों से कहा कि उत्पादन बढ़ाओ-उत्पादन बढ़ता है कठोर परिश्रम से, तप से, यहां के लोग हो गये आरामतलब, मेहनत कर नहीं सकते, प्रयोग किया तो क्या किया, मिला दिये पपीते के बीज काली मिर्च में, उत्पादन बढ़ गया। गर्म मसाले में घोड़े की ली। हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा। हल्दी, वह भी पिसी हुई और सस्ती क्यों? पता लगा ईटों का चूरा मिला दिया पिसी हल्दी में, यहां तक कि पूजा की चीज सामग्री में भी दुकान का कूड़ा-करकट। ईश्वर के साथ भी धोखा, कैसे भला हो जाये इस देश का। इसी से हम श्रेष्ठता का दम भरते हैं। मानव ऊँचा उठता है अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण परन्तु आज कहां है वह प्रेम के अंकुर जो सुदामा और कृष्ण में थे। आज कहां है अर्जन की वीरता, चन्द्रगुप्त का पौरूष जिसके सामने बड़ी-बड़ी ताकतें हिल गई-कहां है आज प्रणबीर प्रताप जैसे प्रणधारी मरते मर गये पर प्रण से पीछे न हटे, हिन्दुत्व का दीवाना धर्मरक्षक शिवाजी शिव अवतार आज क्यों नहीं कल्याण कर रहा है। कोई कल्याण भी कैसे करे, न बल न बुद्धि, घमंड सबसे ज्यादा है। थोड़ी शक्ति हो गर्व से चूर हो जाते हैं। किसी हिन्दी के कवि ने बहुत ही सुन्दर लिखा है कि हमारा जीवन कैसा हो?

इस विश्व के बाग में आकर के यूं फल के मत इतराते चलो।
दिल को न दुखाओ किसी दुखीके मत मार्ग में कांटे बिछाते चलो।।
हे हितैषी बहार ये दो दिन की अपने भाईयों को अपनाते चलो।
खुशबू का खजाना लुटाते चलो निज जीवन सफल बनाते चलो।।

आज हम सब एक दूसरे को गले लगा लें बीच की बनावटी दीवरों को तोड़ डालें। मिलें तो ऐसे मिलें कि फिर मिलकर कभी अलग न हों। हम सबका अभिमान दूर हो जाये और सबके हृदयों में बहने लगे प्रेम का आनन्द भरा स्रोत।

ऋषियों ने इसके लिए सुन्दर प्रणाली निकाली थी कि यदि आहार और व्यवहार में किसी अशुद्धि के कारण बुद्धि मलिन भी हो जाये या विशेष पवित्र व तीव्र करना चाहें तो प्राणायाम करें। आज हम पश्चिमी सभ्यता की नकल में अपना सर्वस्व लुटा बैठे, इस विद्या से भी अछूते रह गये। साइकिल ट्यूब में थोड़ी सी वायु होती है जो चार-पांच मन बोझा ले जाती है। ऐसे ही जो मनुष्य वायु में भरी शक्ति के इस रहस्य को समझ गये उनका बेड़ा पार है। सब प्राणियों का जीवन वायु के आधार पर चल रहा है। प्रातः सूर्योदय से पहले पहुंच गये किसी एकान्त शुद्ध पवित्र स्थान पर, नदी के किनारे वहां पर पहले गहरे-गहरे श्वास लो, हवा से फेफड़े पूरे भरो, धीरे-धीरे फिर तेजी से एक ही श्वास में सारी वायु बाहर निकाल दो। फिर श्वास रोको फिर वायु धीरे-धीरे अन्दर लो। भावना यह रखो कि बल ओज-तेज-बुद्धिमत्ता विद्या सब श्रेष्ठ गुण मुझमें प्रवेश कर रहे हैं। फिर अन्दर ही रोको, जब न रूके तब तेजी से बाहर निकाल दो। फिर श्वास बाहर ही रोको। यह एक प्राणायाम हुआ। कम से कम नित्य प्रति नियम से तीन तो करने ही चाहिए। ज्यादा से ज्यादा 21 करें। इससे बुद्धि पवित्र व सूक्ष्म होती है, आयु बल विद्या बढ़ती है। हमारे पास कुछ भी कमी न रहेगी, बुद्धि का खजाना हमारे लिए खुल जायेगा। फिर हममें यह सामर्थ्य होगी कि हम जानेंगे अच्छा क्या है, बुरा क्या है। दूसरों को भी सत्यपथ पर लायेंगे। हम यहीं तक सीमित न रहेंगे फिर हमें यह भी बोध हो जायेगा कि संसार क्या है, इसका रचयिता कौन है, कहां रहता है, कैसा है तथा मैं क्या हूं, कौन कहां से क्यों आया हूं, क्या मुझे करना है, मेरा लक्ष्य क्या है। हममें अद्भुत शक्ति का संचार होगा। परमेश्वर स्वयं बोध स्वरूप है। हम सब जीवों के बोध का कारण है इसी से उसका नाम बुध है। हम भी बुध हो सकते हैं, जबकि हमारा आहार-व्यवहार बुद्धिपूर्वक हो।

बुद्धि बढ़ाने के लिए आयुर्वेदिक अनुपम योग

1. छाया में सुखाकर ब्राह्मी बूटी 60 ग्राम और काली मिर्च 3 ग्राम दोनो को खूब बारिक पीसकर चूर्ण बना लेवे। प्रतिदिन 2 ग्राम गाय के दूध साथ प्रातः काल निराहार सेवन करें। बड़ी अनुपम वस्तु है। मस्तिष्क की सब कमजोरी दूर कर बुद्धि की वृद्धि करती है।

2. यह चूर्ण मस्तिष्क को बलवान बनाकर आलस्य को दूर करता है पेट साफ हो जाता है और प्रत्येक काम में मन लगता है। 50 ग्राम धनिया और 20 ग्राम बड़ी हरड की छाल को खूब बारीक पीसकर चूर्ण बना लें तथा बराबर की शक्कर मिला लेवें। प्रातः सायं 5-5 ग्राम की मात्रा पानी से फांक लिया करें।

- मनु संस्कृति संस्थान, डी-25, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

जिन्दगी तब बेहतर होती है जब हम खुश होते हैं, लेकिन यकीन करो जिन्दगी तब बेहतरीन हो जाती है जब हमारी वजह से सब खुश होते हैं।

(पृष्ठ 2 का शेष)

इस समारोह में 6 वैदिक विद्वानों एवम् 6 आर्य संन्यासियों को सम्मानित किया गया। भूतपूर्व राज्यपाल, भूतपूर्व सांसद, देश के भूतपूर्व महालेखा परीक्षक एवम् नियंत्रक श्री टी.एन. चतुर्वेदी को सामाजिक विकास के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए 'आजीवन उपलब्धि सम्मान'से सम्मानित किया गया। डी.ए.वी. के भूतपूर्व विद्यार्थी एवम् हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत को आर्य समाज एवम् शैक्षणिक क्षेत्र में सराहनीय कार्यो के लिए 'विशिष्ट सम्मान' प्रदान किया गया। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा के कुलपति डॉ. बिजेन्द्र के पूनिया शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए सम्मानित किए गए।

प्राचार्यो में डी.बी.एफ. दयानन्द कॉलेज ऑफ आर्ट्स एड साइंस, शोलापुर के प्रिंसिपल श्री विजय कुमार पांडुरंग, डी.ए. वी. सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, अमृतसर के प्रिंसिपल श्री अजय बेरी, डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल, भिलाई के प्रिंसिपल श्री प्रशांत कुमार एवम् महाराज हरिसिंह एग्रीकल्चरल कॉलेजियट स्कूल, जम्मू की प्रिंसिपल श्रीमती स्वीन पुरी को 'महात्मा हंसराज सम्मान' से सम्मानित किया गया। उसके अतिरिक्त 7 विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र विशिष्ट उपलब्धियों के लिए पुरस्कृत किया गया। महात्मा हंसराज के जीवन पर आधारित नृत्य नाटिका 'मनुर्भव' की प्रस्तुति समर्पण दिवस का मुख्य आकर्षण थी। इस नृत्य नाटिका में लगभग 1000 विद्यार्थियों ने अपने नृत्य और अभिनय से उपस्थित जन समुदाय को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। इसका निदेशन सुप्रसिद्ध कोरियोग्राफर श्री उदय सहाय ने किया। आलेख श्री अजय ठाकुर का था। 'समर्पण दिवस' के अवसर पर महात्मा चैतन्य मुनि ने अपना आध्यात्मिक आशीर्वाद दिया। डी.ए.वी. सेनटेनरी पब्लिक स्कूल, वैशाली नगर, जयपुर में आयोजित इस समारोह में देश भर से 10000 की संख्या में उपस्थित वैदिक विद्वानों, आर्य संन्सासियों, बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों एवम् विद्यार्थियों ने सोत्साह भाग लिया।

इस अवसर पर विशिष्ट संन्यासीवृन्द एवम् विद्वानों को प्रतिष्ठित पत्र/मान राशि देकर सम्मानित किया गया।

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल द्वारा स्थापित बहादुर चन्द मुंजाल (बी.सी.एम.) विद्यालय लुधियाना का राष्ट्रीय कीर्तिमान

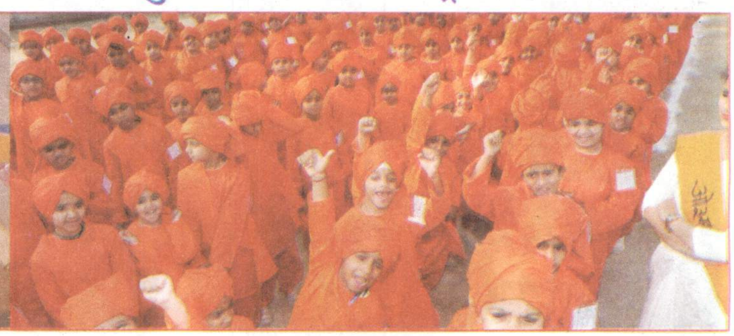

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की विचारधार के प्रतिपोषक एवं **आर्य समाज मॉडल टाऊन लुधियाना के तत्वावधान** में चल रहे विद्यालय **बी.सी.एम. आर्य मॉड सीनियर सेकेण्डरी स्कूल की 40वीं वर्षगाठ** "उत्कृष्टता दिवस" के रूप में अत्यत धूमधाम से सम्पन्न हुई। इस ऐतिहासिक एवम् अविस्मरणीय क्षण में विद्यालय के प्राथमिक विभाग के 1500 छात्रों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती का अभिरूप बनकर विश्वशांति का संदेश दियां चित्र 40 की आकृति में खड़े होकर छात्रों ने ना केवल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कर रहे विद्यालय की 40वीं वर्षगांठ बनाई बलिक ओ३म ध्वनि के दीर्घ उच्चारण के साथ सर्वत्र परम आनन्द का वातावरण भी उत्पन्न कर दिया। गायत्री मन्त्र तथा "चमन में फिजा" गीत की प्रस्तुति द्वारा समस्त वातावरण संगीतमय हो उठा। दो बार शांति मन्त्र के उच्चारण के साथ पूरे ब्रह्माण्ड को रामव्रत स्वर में शाति संदेश से ओत-प्रोत कर विद्यालय ने लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में विद्यालय का नाम दर्ज कराने का सराहनीय प्रयास किया। इस अवसर पर सभी को समर्पण हो आए स्व. पूज्य महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जिन्होंने अपने पिता स्व. बहादुर चन्द मुंजाल के स्मृति में इस विद्यालय की स्थापना की थी का स्वपन्न जैसे आप पूर्ण हो रहा हो। इस अवसर पर लुधियाना का चार प्रतिष्ठित प्रशासन्ति अधिकारी श्री सुरेन्द्र बेरी (जिलाधिकारी, फूड एड सिविल सप्लाई कंज्यूमर अफेयर्स विभाग), मालवा खालसा कॉलेज ऑफ एजुकेशन की प्रधानाचार्य डॉ. नगेन्द्र कौर,लेफ्टिनंट जनरल श्री ज्योति बिष्ट तथा आर.एम. मॉडल स्कूल के प्रधानाचार्य श्री एम.एल. कालरा ने विद्यालय की प्रबंधक समिति के गणमान्य सदस्यों के साथ उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस गरिमामयी अवसर पर प्रधानाचार्य डॉ. श्रीमती परमजीत कौर ने कहा कि हम अपने छात्रों को पिछले चालीस वर्षो से शिक्षा के माध्यम से पार्थिव से आग्नेय बनाकर समाज को नया रूप देने का प्रयास कर रहे है ताकि सकारात्मक ऊर्जा वाहण करके हमारे छात्र पूरे ब्रह्माण्ड की सकारात्मक गतिशीलता दे सके। इस कार्यक्रम में श्री राजेन्द्र जी सयाल (प्रधान, आर्य समाज मॉडल टाउन एवं विद्यालय प्रबंधक समिति। श्री सुरेश मुंजाल (उपप्रधान), आर्य समाज मॉडल टाउन एवम् विद्यालय प्रबंधक समिति। कैप्टन विजय सयाल (मैनेजर), श्री विनोद सहगल, श्री विजय गुलाटी, श्री संजय खोसला, श्री नितिन नाहन, श्री सतीश गुप्ता, श्री अशोक सूद तथा अन्य गणमान्य सदस्य विशेष रूप से सम्मिलित हुए।

टंकारा समाचार जून 2017
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-06-2017
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.05.2017

दूसरे जितना सोचते है, उससे अधिक करके दिखाना ही आपकी सफलता है

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय